लखनऊ, मंगलवार, 28 फरवरी 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 9 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

वह दिन दूर नहीं जब देशवासी मेक इन इंडिया विमान में घूमेंगे : मोदी

चप्पल वाला भी करेगा हवाई सफर : पीएम

❑ बजट में आदिवासियों व ग्रामीण क्षेत्रों को अंतिम छोर तक सुविधाएं प्रदान करने पर ध्यान किया गया है केंद्रित : प्रधानमंत्री

एजेंसी

शिवमोगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में तेजी से बढ़ते विमानन उद्योग पर प्रकाश डालते हुए सोमवार को कहा, ''हवाई चप्पल पहनने वालों को हवाई जहाज में यात्रा करनी चाहिए और मैं ऐसा संभव होते देख रहा हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने शिवमोगा हवाई अड्डे का उद्घाटन करने के बाद एक जनसभा में कहा कि आने वाले दिनों में भारत को हजारों विमान चाहिए होंगे। जल्द ही भारत में बने (मेड-इन-इंडिया) यात्री विमान उपलब्ध होंगे। मोदी ने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि 'एयर इंडिया 2014 से पहले अकसर नकारात्मक वजहों से चर्चा में रहती थी और कांग्रेस शासन के दौरान उसे घोटालों के लिए पहचाना जाता था। हवाई अड्डे का उद्घाटन कर्नाटक में भाजपा के कद्दावर नेता एवं चार बार मुख्यमंत्री रहे बीएस येदियुरप्पा के 80वें जन्मदिन के अवसर पर किया गया। येदियुरप्पा शिवमोगा जिले से आते हैं। शिवमोगा जनसभा में लोगों से येदियुरप्पा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मोबाइल की 'फ्लैश लाइटश् चालू करने को कहा। उन्होंने कहा कि कर्नाटक ने 'डबल इंजन सरकार को बार-बार मौका देने का मन बना लिया है। यह मोदी का इस साल राज्य का पांचवां दौरा है, जहां मई में विधानसभा चुनाव होने हैं। नया हवाई अड्डा करीब 450 करोड़ रुपए की लागत से बनाया गया है। हवाई अड्डे के यात्री टर्मिनल भवन में प्रति घंटे 300 यात्री आ-जा सकते हैं। अधिकारियों ने बताया कि हवाई अड्डे से शिवमोगा और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों से संपर्क एवं पहुंच में सुधार होने की उम्मीद है। प्रधानमंत्री ने कुल मिलाकर यहां 3,600 करोड़ रुपए से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी, मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई और येदियुरप्पा भी मौजूद रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कहा कि केंद्रीय बजट 2023-24 में आदिवासी और ग्रामीण इलाकों में अंतिम छोर तक सुविधाएं मुहैया कराने पर विशेष ध्यान दिया गया है। रीचिंग द लास्ट माइल पर बजट के बाद के वेबिनार को संबोधित करते हुए, मोदी ने कहा, पहली बार, देश इस पैमाने पर हमारे देश के आदिवासी समाज की क्षमता का दोहन कर रहा है। जितना अधिक जोर हम सुशासन पर देंगे, उतनी ही आसानी से अंतिम मील तक पहुंचने का हमारा लक्ष्य पूरा हो जाएगा, अंतिम मील तक पहुंचने का दृष्टिकोण और संतृप्ति की नीति एक दूसरे के पूरक हैं। जब हमारा उद्देश्य सभी तक पहुंचना है, तो भेदभाव और भ्रष्टाचार की कोई गुंजाइश नहीं होगी। उन्होंने कहा कि आदिवासी समुदाय के सबसे वंचित लोगों के लिए विशेष मिशन के तहत तेजी से सुविधाएं प्रदान करने के लिए पूरे देश के दृष्टिकोण की आवश्यकता

बिहार सरकार का सुशासन और न्याय के साथ विकास पर जोर : राज्यपाल

एजेंसी

पटना। बिहार विधानसभा के बजट सत्र का सोमवार को आगाज हो गया। सत्र की शुरूआत राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर के अभिभाषण से हुई। राज्यपाल ने सरकार की उपलब्धियां गिनाई तो भविष्य की योजनाओं का भी उल्लेख किया। दोनो सदनों के सदस्यों को संयुक्त रूप से संबोधित करते हुए राज्यपाल ने किसानों के लिए किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया तो

राज्य में कानून व्यवस्था में सुधार के लिए किए जा रहे कार्यों का भी विवरण दिया। राज्यपाल ने कहा कि राज्य में अपराध नियंत्रण के लिए सरकार की तरफसे व्यापक व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए बड़े पैमाने पर भर्तियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि हाल ही में 10 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को नियुक्ति पत्र बांटे गए हैं। उन्होंने कहा कि पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए 112 नंबर चालू किया गया है। 400 समर्पित (डेडीकेटेड) गाड़ियों की शुरूआत की गई है। विभाग में 75,543 पदों का सृजन किया गया है। उन्होंने कहा कि पुलिस भवन निर्माण का काम भी आगे बढ़ाया जा रहा है। राज्य के 44 में से 33 पुलिस के लिए भवन हैं। आठ पुलिस लाइन के भवन निर्माण होंगे। पुलिस अनुसंधान को तकनीकी रूप से अधिक सक्षम बनाने के लिए सरकार ने सभी 12 प्रक्षेत्रों में विधि विज्ञान प्रयोगशाला स्थापित करने का निर्णय लिया है। राज्यपाल ने अभिभाषण के दौरान कहा कि बिहार सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम रही है। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में सरकार निरंतर काम कर रही है। इस पर भाजपा विधायकों ने ये कहते हुए हंगामा शुरू कर दिया कि स्कूलों में शिक्षक और बिल्डिंग नहीं है।

उमेश पाल हत्याकांड का एक आरोपी ढेर, धूमनगंज इलाके में पुलिस से हुई थी मुठभेड

संवाददाता, प्रयागराज उमेश पाल हत्याकांड का एक आरोपी मुठभेड़ में ढेर हो गया है। अरबाज नाम के इस शातिर अपराधी को धूमनगंज इलाके में पुलिस ने मार गिराया है। यह मुठभेड़ नेहरु पार्क के पास हुई है। बता दें कि घायल अरबाज को पुलिस स्वरूप रानी अस्पताल लेकर रवाना हुई, लेकिन आरोपी उसके पहले ही दम तोड़ दिया। मिल रही जानकारी के अनुसार पुलिस एनकाउंटर में अरबाज को जान से मार दिया गया है। नेहरू पार्क के पास मुठभेड़ हुई है। अरबाज बाहुबली नेता अतीक अहमद का करीबी बताया जा रहा है. अरबाज क्रेटा गाड़ी चला रहा था। बता दें कि उमेश पाल हत्याकांड में शामिल आरोपियों की पुलिस तलाश में जुटी हुई थी। उमेश पाल और उनके सुरक्षाकर्मी संदीप निषाद की शुक्रवार को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस हमले में घायल हुए पाल के दूसरे सुरक्षाकर्मी राघवेंद्र सिंह को गंभीर हालत में यहां एसआरएन (स्वरूपरानी नेहरू) अस्पताल में भर्ती कराया गया था। प्रयागराज पुलिस के मीडिया प्रकोष्ठ द्वारा जारी सूचना के मुताबिक, सिंह के परिजनों की इच्छा और एसआरएन के चिकित्सकों की टीम की सलाह पर उन्हें बेहतर इलाज के लिए रविवार शाम एसजीपीजीआई लखनऊ रेफर किया गया। शुक्रवार को प्रयागराज में राजूपाल हत्याकांड के मुख्य गवाह उमेश पाल की हत्या कर दी गई थी. इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को सदन में खुद मोर्चा संभालते हुए प्रदेश में माफियावाद के लिए विपक्षी खासकर समाजवादी पार्टी को जिम्मेदार ठहराते हुए नेता प्रतिपक्ष को जमकर लताड़ लगाई थी. सीएम योगी ने सदन के अंदर कहा था कि प्रदेश के माफियाओं को मिट्टी में मिला दिया जाएगा।

महबूबा मुफ्ती ने पुलवामा में मारे गए कश्मीरी पंडित के परिवार से मुलाकात की

एजेंसी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने सोमवार को आतंकवादियों द्वारा मारे गए स्थानीय पंडित संजय शर्मा के परिवार से मुलाकात की। महबूबा मुफ्ती ने पुलवामा जिले के अचन गांव में उनके शोक संतप्त परिवार से मुलाकात की और उनके साथ संवेदना और एकजुटता व्यक्त की। मुफ्ती ने परिवार को इस दुखद घड़ी में हर संभव मदद का आश्वासन दिया। संजय पंडित एक बैंक में सिक्योरिटी गार्ड के पद पर कार्यरत था। उसके पैतृक गांव में आतंकियों ने उसकी हत्या कर दी थी। इस हत्या की निंदा करते हुए उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि आतंकवादियों को पकड़ने के लिए सुरक्षा बलों को खुली छूट दी गई है। चार पूर्व मुख्यमंत्रियों, डॉ फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती और गुलाम नबी आजाद ने आतंकवादियों के क्रूर कृत्य की निंदा की है। अपनी पार्टी के अध्यक्ष सैयद अल्ताफ बुखारी ने कहा कि इस निर्दोष हत्या के लिए जिम्मेदार लोग जम्मू-कश्मीर के लोगों के दुश्मन हैं। स्थानीय पंडित की हत्या की निंदा करने के लिए कल घाटी में कई स्थानों पर मौन मोमबत्ती की रोशनी में विरोध प्रदर्शन किया गया, जो अपने पैतृक गांव में अपने परिवार के साथ रह रहा था और उसने गांव में अपने मुस्लिम पड़ोसियों के साथ रहने का विकल्प चुना था।

मैंने टॉप 10 माफियाओं की मांगी सूची, पीछे क्यों हट रही है सरकार : अखिलेश

❑ अखिलेश ने सिसोदिया की गिरफ्तारी की आलोचना कीय बताया बड़ी साजिश का हिस्सा

संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सदन की कार्रवाई में शामिल होने से पहले एक बार फिर भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि आने वाले चुनाव के चलते सरकार ईडी और सीबीआई का दुरुपयोग कर रही है। अदाणी को लेकर केंद्र सरकार पर सवाल उठाए। उत्तर प्रदेश बड़ा प्रदेश है इसलिए यहां साजिश बड़े स्तर पर की जा रही है। मैंने टॉप 10 माफ्रियाओं की सूची मांगी है। योगी सूची तो दें। महंगाई और रोजगार के मुद्दे पर भी यूपी की भाजपा सरकार पर कई आरोप लगाए है। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भ्रष्टाचार के आरोप में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की सीबीआई द्वारा गिरफ्तारी की आलोचना करते हुए सोमवार को कहा कि यह कार्रवाई एक बड़ी साजिश का हिस्सा है। अखिलेश ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की गिरफ्तारी का जिक्र आने पर कहा यहां यह बात समझनी होगी कि इसमें कौन-कौन मिला हुआ है। यह एक बड़ी साजिश है। हमें तो यह पढ़ने को मिल रहा है कि भाजपा का कोई अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ है, वह भी इसमें शामिल है। उन्होंने कहा इस तरह के जितने भी

विपक्षी नेता हैं, उनके खिलाफजांच चल रही हैं। जितनी भी संस्थाएं हैं, चाहे आयकर विभाग हो, चाहे प्रवर्तन निदेशालय हो या सीबीआई हो, सबको लगाया जा रहा है ताकि आने वाले लोकसभा चुनाव को प्रभावित किया जा सके। जनता यह देख रही है। सपा अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि भाजपा के पास बेरोजगारी और महंगाई का कोई जवाब नहीं है। जिस तरीके से देश की संपत्तियां बेची जा रही हैं.... सरकार के पास उसका भी जवाब नहीं है। आप उत्तर प्रदेश को ही देख लीजिए। यहां की राज्यपाल के अभिभाषण में राज्य में बेरोजगारी की दर चार प्रतिशत बताई जा रही है। बजट भाषण में भी चार प्रतिशत बेरोजगारी दर बताई गई है। इसका मतलब यह हुआ उत्तर प्रदेश के 90 प्रतिशत से अधिक पढ़ने-लिखने वाले नौजवानों को रोजगार या नौकरी मिली हुई है मगर क्या यह सच है इससे पहले, अखिलेश ने सोमवार को एक ट्वीट में भी कहा दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाले मनीष सिसोदिया जी को गिरफ्तार करके भाजपा ने साबित कर दिया है कि वह शिक्षा ही नहीं बल्कि दिल्ली के बच्चों के भविष्य के ख्लाफ भी है। दिल्ली की जनता इसका जवाब अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा को राज्य की सातों सीटें हराकर देगी। एक अन्य ट्वीट में सपा अध्यक्ष ने कहा मनीष सिसोदिया की गिरफ्तारी ने साबित कर दिया है कि भाजपा सरकार वर्ष 2024 से पहले ही अपनी हार मान चुकी है, इसीलिए अलग-अलग प्रदेशों में विपक्षी राजनीतिक शक्तियों को झूठे मुकदमों में फँसा रही है, लेकिन संघर्षशील लोग जेल जाने से नहीं डरते। सच को भला कब तक गिरफ्तार रखा जा सकता है। गौरतलब है कि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने वर्ष 2021-22 की आबकारी नीति लागू करने में कथित भ्रष्टाचार को लेकर दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को करीब आठ घंटे की पूछताछ के बाद रविवार शाम गिरफ्तार कर लिया।

सीबीआई के अधिकतर अधिकारी सिसोदिया की गिरफ्तारी के पक्ष में नहीं थे, लेकिन 'राजनीतिक दबाव' के कारण ऐसा किया : केजरीवाल

आबकारी मामले में मनीष सिसोदिया राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश

सीबीआई ने मांगी 5 दिन की कस्टडी

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को दावा किया कि केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के अधिकतर अधिकारी उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की गिरफ्तारी के पक्ष में नहीं थे, लेकिन उन्होंने ''राजनीतिक दबाव के कारण ऐसा किया। सीबीआई अधिकारियों ने 2021-22 की आबकारी नीति लागू करने में कथित भ्रष्टाचार को लेकर करीब आठ घंटे की पूछताछ के बाद रविवार को सिसोदिया को गिरफ्तार कर लिया था। यह नीति अब समाप्त की जा चुकी है। केजरीवाल ने ट्वीट किया, '' मुझे बताया गया है कि सीबीआई के अधिकतर अधिकारी

मनीष को गिरफ्तार करने के पक्ष में नहीं थे। वे सभी उनका बहुत सम्मान करते हैं और उनके खिलाफकोई सबूत भी नहीं है। हालांकि उनकी गिरफ्तारी को लेकर काफी राजनीतिक दबाव था और उन्हें अपने राजनीतिक आकाओं के आदेश का पालन करना था। सिसोदिया से पहले आम आदमी पार्टी (आप) के नेता एवं दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को पिछले साल जून में गिरफ्तार किया गया था। आम आदमी पार्टी का कहना है कि दिल्ली की शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं में आए व्यापक परिवर्तन में इन दोनों नेताओं की अहम भूमिका रही है। पार्टी की लोकप्रियता और निरंतर चुनावी सफलता में भी इनका योगदान रहा है। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने आबकारी नीति से जुड़े भ्रष्टाचार के एक मामले में गिरफ्तार किये गये दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को सोमवार को शहर की एक अदालत में पेश किया। राउज एवेन्यू अदालत परिसर के अंदर और बाहर भारी संख्या में सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया गया था। जांच एजेंसी ने सिसोदिया को विशेष न्यायाधीश एम.के. नागपाल के समक्ष पेश किया और पांच दिन के लिए हिरासत में सौंपने का अनुरोध किया। सीबीआई ने अदालत को बताया कि गिरफ्तार किये गए दिल्ली के उपमुख्यमंत्री ने दावा किया कि आबकारी नीति मामले में उनकी कोई भूमिका नहीं है, लेकिन जांच से पता चलता है कि उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर फैसला किया। सीबीआई ने अदालत से कहा कि पूछताछ के लिये उसे सिसोदिया की हिरासत की आवश्यकता है। वहीं, सिसोदिया के वकील ने उन्हें हिरासत में देने की सीबीआई के अनुरोध का विरोध किया। उन्होंने अदालत में दलील दी कि उनके मुवक्किल के खिलाफकोई सबूत नहीं है। सीबीआई ने 2021-22 की आबकारी नीति (अब रद्द की जा चुकी) को लागू करने में कथित भ्रष्टाचार को लेकर रविवार शाम सिसोदिया को गिरफ्तार किया था।

जांच में दोषी साबित होते ही अतीक की पत्नी को बसपा से निकाल देंगे : मायावती

संवाददाता

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष मायावती ने कहा है कि प्रयागराज में राजू पाल हत्याकांड के गवाह और उसके एक सुरक्षाकर्मी की हत्या के मामले में सूत्रधार बताए जा रहे पूर्व सांसद अतीक अहमद की पत्नी को जांच में दोषी साबित होते ही बसपा से निष्कासित कर दिया जाएगा।अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन इस वक्त बसपा में है। राजू पाल हत्याकांड के अहम गवाह उमेश पाल और उसके सुरक्षाकर्मी की हत्या के मामले में परवीन के खिलाफमामला दर्ज किया गया है। मामले में अतीक अहमद उसके दो बेटे भी अभियुक्त हैं। मायावती ने सोमवार को सिलसिलेवार ट्वीट कर कहा, ''प्रयागराज में राजू पाल की वर्षों पहले हुई हत्या के मामले में अहम गवाह अधिवक्ता उमेश पाल और उनके सुरक्षाकर्मी की हत्या के आरोप

में अतीक अहमद के बेटे एवं उनकी पत्नी के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज किए जाने की भी सूचना प्रकाशित हुई है। बसपा ने इसका गम्भीरता से संज्ञान लेते हुये यह निर्णय लिया है कि इस मामले में जारी जांच में इनके दोषी साबित होने पर अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन को पार्टी से जरूर निष्कासित कर दिया जायेगा।बसपा अध्यक्ष ने समाजवादी पार्टी (सपा) पर अतीक अहमद को प्रश्रय देने का आरोप लगाते हुए एक अन्य ट्वीट में कहा, ''यह बात भी सर्वविदित है कि अतीक अहमद समाजवादी पार्टी का ही 'प्रोडक्ट' है, जिस पार्टी से वह सांसद और विधायक भी रहा है। अब राजू पाल की पत्नी भी बसपा से सपा में चली गयी है, जिस पार्टी को वह मुख्य दोषी ठहराती थी। इसलिए इसकी आड़ में कोई भी राजनीति करना ठीक नहीं है। मायावती ने एक अन्य ट्वीट में कहा, ''यह भी विदित है कि किसी भी अपराध की सजा बसपा द्वारा उनके परिवार एवं समाज के किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नहीं दी जाती है। लेकिन यह भी सच है कि पार्टी किसी भी जाति एवं धर्म के आपराधिक तत्व को बढ़ावा नहीं देती है। वर्ष 2005 में बसपा के तत्कालीन विधायक राजू पाल की हत्या के मामले में अहम गवाह रहे उमेश पाल और उसके सुरक्षाकर्मी की पिछली 24 फरवरी को प्रयागराज में दिनदहाड़े बम और गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। माफ्रिया राजनेता अतीक अहमद राजू पाल हत्याकांड का मुख्य अभियुक्त है और वह इस वक्त गुजरात की एक जेल में बंद है।

संक्षिप्त समाचार

सरकारी भर्तियों में ट्रांसजेंडरों को बराबरी का अवसर ऐतिहासिक फैसला : शिवराज सिंह चौहान

एजेंसी, भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज कहा कि मध्यप्रदेश में सरकारी भर्तियों में ट्रांसजेंडरों को सामान्य पुलिस व महिला के साथ बराबरी का अवसर देने का फैसला ऐतिहासिक निर्णय है। शिवराज सिंह चौहान ने संवाददाताओं से चर्चा के दौरान कहा कि प्रदेश में सरकारी भर्तियों में ट्रांसजेंडरों को सामान्य पुलिस व महिला के साथ बराबरी का अवसर देने का फैसला किया गया है। उन्होंने कहा कि वे इस फैसले को ऐतिहासिक मानते हैं।

प्रगतिशील, कल्याणकारी सरकार की बाट जोह रही मेघालय-नागालैंड की जनता: मल्लिकार्जुन खड़गे

एजेंसी, नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोमवार को कहा कि मेघालय और नागालैंड की जनता अपने यहां प्रगतिशील तथा कल्याणकारी सरकार की उम्मीद लगाये बैठे हैं। मल्लिकार्जुन खड़गे ने ट्वीट किया, मेघालय और नागालैंड की जनता प्रगतिशील तथा कल्याणकारी सरकारों की उम्महद लगाये हुए हैं। उन्होंने आगे कहा, मैं मेघालय और नागालैंड के हमारे बहनों और भाइयों से बदलाव का एक मौका देने का आग्रह करता हूं। उन्होंने पहली बार वोट डालने वाले मतदाताओं से बेहतर भविष्य के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने की भी अपील की। पूर्वोत्तर के दोनों राज्यों मेघालय और नागालैंड की 60 विधानसभा सीटों में से 59 पर कड़ी सुरक्षा के बीच मतदान हो रहा है। मेघालय में एक सीट पर एक उम्मीदवार की मृत्यु के बाद चुनाव टाल दिया गया है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने अग्निपथ योजना को चुनौती देने वाली याचिकाओं को किया खारिज

एजेंसी, नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को केंद्र की अग्निपथ योजना को चुनौती देने वाली याचिकाओं को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इसे राष्ट्रीय हित में और यह सुनिश्चित करने के लिए पेश किया गया है कि सशस्त्र बल अच्छी तरह से सुसज्जित हों। योजना, इसकी भर्ती प्रक्रिया और उम्मीदवारों की नियुक्ति को चुनौती देती हुई याचिकाएं दायर की गई थी। मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति सुब्रमणियम प्रसाद की खंडपीठ ने कहा, अग्निपथ योजना को चुनौती देने वाली सभी याचिकाएं खारिज की जाती हैं। पीठ ने भारतीय सशस्त्र बलों में प्रवेश योजना की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए 23 याचिकाओं को खारिज कर दिया।

पवन खेड़ा को नहीं मिली राहत, कोर्ट ने बढ़ाई अंतरिम जमानत

एजेंसी, नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफउनकी कथित आपत्तिजनक टिप्पणी से जुड़े एक मामले में दी गई अंतरिम जमानत की अवधि तीन मार्च तक बढ़ा दी। असम पुलिस ने पिछले हफ्ते खेड़ा को गिरफ्तार किया था। प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने असम की तरफसे पेश हुए सॉलीसीटर जनरल तुषार मेहता के उस प्रतिवेदन पर संज्ञान लिया कि प्रदेश की पुलिस मामले में अपना जवाब दाखिल करना चाहती है।उत्तर प्रदेश की तरफ से पेश हुई अतिरिक्त महाधिवक्ता गरिमा प्रसाद ने कहा कि वह भी इस मामले में जवाब दाखिल करेंगी।

संपादकीय

आप की महापौर

राजनीतिक धींगामुश्ती के चलते तीन बार टला एमसीडी महापौर का चुनाव आखिरकार चौथी बार सिरे चढ़ ही गया। दिल्ली की सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई में डेढ़ दशक बाद आखिरकार भाजपा का वनवास हो गया और राजतिलक आप की शैली ओबेरॉय का हुआ। जिन्हें निर्धारित न्यूनतम वोटों से अधिक 150 पार्षदों के वोट मिले। शैली ने भाजपा की रेखा गुप्ता को 34 वोटों के अंतर से हराया। आखिरकार शीर्ष अदालत की दखल के बाद हुए इस चुनाव को आप अपनी नीतियों की जीत बता रही है। दरअसल, दिसंबर 2022 में हुए दिल्ली नगर निगम चुनाव के बाद भाजपा 15 साल राज करने के बाद सत्ता से बाहर हो गई। जहां आम आदमी पार्टी को 134 सीटें मिली थी, वहीं भाजपा को 104 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा था। वहीं दूसरी ओर डिप्टी मेयर के पद पर भी आप के आले मोहम्मद इकबाल आसीन हुए। दरअसल, बुधवार को हुए चुनाव में कांग्रेस के नौ पार्षदों ने चुनाव में भाग नहीं लिया। बहरहाल, अच्छी बात है कि मेयर चुनाव के लिये चौथी बार हुए मतदान में इस बार न हाथापाई हुई और न ही नारेबाजी। उल्लेखनीय है कि विपक्षी पार्षदों के लगातार हंगामे के बाद आप की मेयर पद की उम्मीदवार शैली ओबेरॉय चुनाव कराने के लिये सुप्रीम कोर्ट चली गई थीं। दरअसल, एक विवाद का विषय उप राज्यपाल द्वारा मनोनीत सदस्यों के वोटिंग अधिकार को लेकर था। तब सुप्रीम कोर्ट ने आप प्रत्याशी के पक्ष में निर्देश देते हुए कहा था कि दिल्ली में एमसीडी मेयर के चुनाव में मनोनीत सदस्य मतदान नहीं कर सकेंगे। उल्लेखनीय है कि मेयर चुनाव में कुल 274 पार्षदों के बीच 138 वोट हासिल करने जरूरी थे। वैसे शैली ओबेरॉय ने एमसीडी का ताज तो हासिल कर लिया है, लेकिन उनकी सल्तनत सिर्फ31 मार्च तक ही रहेगी। बहरहाल, यह वक्त बतायेगा कि अपने 38 दिन के कार्यकाल में शैली ओबेरॉय जनता की आकांक्षाओं पर कितना खरा उतर पायेंगी। दरअसल, डीएमसी की धारा दो (67) के अनुसार दिल्ली नगर निगम का साल एक अप्रैल से आरंभ होकर अगले साल 31 मार्च तक समाप्त होता है। फिर कायदे से नये महापौर का चुनाव होगा। बहरहाल, दिल्ली नगर निगम के चुनाव के अस्सी दिन के बाद दिल्ली को अपना नया मेयर मिल ही गया है। वह भी एक दशक बाद मेयर के रूप में महिला मेयर मिली है, इससे पहले भाजपा की महिला मेयर बनी थी। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2012 में जिस दिल्ली नगर निगम को तीन भागों में बांटा गया था, उन्हें एक बार फिर बीते साल एक कर दिया गया था। एकीकरण के बाद यह पहला चुनाव था, जिसमें आप ने बाजी मारी है। अब देखना होगा कि आप अपने वायदे के अनुसार दस गारंटियों व विवादित लैंडफिल मामले में किस हद तक सफल होती है। लेकिन अभी दिल्ली की मेयर शैली के लिये बड़ी चुनौती एमसीडी में स्थायी समितियों के चयन व समर्थन हासिल करने की होगी। दरअसल, स्थायी समिति के छह सदस्यों के चुनाव के लिये सीधे चुनाव का फार्मूला लागू होता है,जिसमें वरीयता क्रम में पहले 36 वोट पाने वाले पार्षद की जीत होती है। यदि कांग्रेस के पार्षद मतदान करते हैं तो आप को उसका फायदा मिलेगा। उसके 134 वोट होने के कारण उसे पहली तीन सीटें मिल सकती हैं। ऐसे में आप के लिये नगर निगम के भीतर मनमाना फैसला ले पाना आसान भी नहीं होगा क्योंकि कार्यकारी शक्तियां चुनी गई स्थायी समितियों के पास ही होती हैं। जबकि मेयर के पास व्यवस्था चलाने की सीमित शक्तियां ही होती हैं। बहरहाल, दिल्ली में आखिरकार बहुमत का जनादेश पाने वाले दल को ही कामयाबी मिली है। एक सवाल पूरे देश को सोचने को बाध्य करता रहा है कि आखिर क्या वजह है कि पूर्ण बहुमत पाने वाले दल को अपना मेयर चुनने में तीन बार विफलता मिली? हारने वाले दल ने जनादेश का सम्मान क्यों नहीं किया? क्यों आखिर वक्त तक कोशिश रही है ।

सच कहने का समय

क्या सच कहने का भी कोई वक्त होता है या भारत की मौजूदा राजनीति में अब इसके लिए भी समय निर्धारण किया जाएगा। क्योंकि बीबीसी की गुजरात दंगों पर बनी डाक्यूमेंट्री को भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित करने के बाद भी उस पर सवाल उठाए जा रहे हैं। विदेश मंत्री एस.जयशंकर ने एक साक्षात्कार में बीबीसी की डाक्यूमेंट्री की टाइमिंग पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने इसे राजनीति से प्रेरित बताया है। श्री जयशंकर ने कहा कि लगता नहीं है कि भारत में चुनाव का मौसम शुरू हुआ है, लेकिन निश्चित रूप से यह लंदन और न्यूयॉर्क में शुरू हो गया है। यह उन लोगों द्वारा खेली जाने वाली राजनीति है जो राजनीति में आने का साहस नहीं रखते हैं। एस जयशंकर का यह बयान तब आया है जब प्रधानमंत्री मोदी पर आई डॉक्यूमेंट्री के बीच ही बीबीसी के दिल्ली और मुंबई कार्यालय पर आयकर छापे पड़े और अब इसे लेकर ब्रिटिश संसद में सवाल उठाए जा रहे हैं। ब्रिटेन की संसद में लेबर पार्टी के नेता फैबियन हेमिल्टन ने भारत सरकार की इस कार्रवाई पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा, जहां सही मायनों में प्रेस अपना काम करने के लिए स्वतंत्र हो, ऐसे लोकतांत्रिक देश में बिना वजह आलोचनात्मक आवाजों को नहीं दबाया जा सकता है। अभिव्यक्ति की आजादी की हर कीमत पर रक्षा होनी चाहिए। जबकि डेमोक्रेटिक यूनियनिस्ट पार्टी (डीयूपी) के सांसद जिम शैनन ने कहा कि इस डॉक्यूमेंट्री की रिलीज के बाद से भारत में इसकी स्क्रीनिंग रोकने की पुरजोर कोशिशें की जा रही हैं। इसके साथ ही मीडिया और पत्रकारों की अभिव्यक्ति की आजादी का दमन किया जा रहा है। अब तक विदेशी मीडिया पर भारत की इन कार्रवाइयों की चर्चा थी, अब ब्रिटेन की संसद में इस पर चिंता व्यक्त की जा रही है, तो इसका अर्थ यही है कि कहीं न कहीं केन्द्र सरकार के फैसलों का सही संदेश नहीं जा रहा है। सरकार को अपने फैसलों की समीक्षा करनी चाहिए, लेकिन इसकी जगह जनता को ये बताया जा रहा है कि ये सब विदेशी साजिश का नतीजा है। सरकार को अपने अनुभवों से सही सलाह देने की जगह एस.जयशंकर ऐसे बयान दे रहे हैं, जो सरकार के खिलाफ ही जा रहे हैं। जैसे साक्षात्कार में उन्होंने सवाल उठाया कि 1984 में दिल्ली में बहुत कुछ हुआ था। हमने एक डॉक्यूमेंट्री क्यों नहीं देखी। जिस तरह भाजपा नेता 2002 के जवाब में 1984 की याद दिलाते हैं, उसी परिपाटी को कायम रखते हुए एस.जयशंकर ने सवाल उठाया। लेकिन इसमें उनके होमवर्क में शायद कोई कमी रह गई। क्योंकि 2010 में 1984- ए सिख स्टोरी, इस शीर्षक से एक डाक्यूमेंट्री बीबीसी पहले ही बना चुका है। लेकिन मनमोहन सिंह सरकार ने उस पर कभी कोई रोक नहीं लगाई, तो उसकी ऐसी चर्चा भी नहीं हुई, न ही लोगों ने उसे ढूंढ-ढूंढ कर देखा। 2014 में आपरेशन ब्लू स्टार के 30 साल पूरे होने पर बीबीसी के पत्रकार मार्क टुली ने गन फायर ओवर द गोल्डन टैंपल नाम से दो भागों की डाक्यूमेंट्री बनाई थी। इसके अलावा भी बीबीसी ने सिख दंगों पर कई तरह से कवरेज किया है। यह उसकी निष्पक्ष पत्रकारिता के अनुकूल है, लेकिन एस.जयशंकर उसे राजनीति से प्रेरित बता रहे हैं। अपने इस साक्षात्कार में एस.जयशंकर ने कांग्रेस की जमकर आलोचना की और आरोप लगाया कि गांधी परिवार ने उनके पिता के साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया और उनकी काबिलियत को नजरंदाज किया। गौरतलब है कि उनके पिता डॉ के सुब्रमण्यम वरिष्ठ नौकरशाह थे और कई अहम पदों के अलावा इंस्टीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज एंड एनालिसिस के प्रमुख का कार्यभार उन्होंने संभाला था। जिन गुजरात दंगों पर बनी डाक्यूमेंट्री पर श्री जयशंकर सवाल उठा रहे हैं, उन्हीं दंगों पर 4 अप्रैल 2002 को डॉ. सुब्रमण्यम का आलेख धर्मा वॉज किल्ड इन गुजरात, यानी गुजरात में धर्म की हत्या हुई, इस शीर्षक से द टाइम्स ऑफइंडिया में छपा था। जिसमें उन्होंने हिंदुत्व और रामराज्य की सही परिभाषाएं समझाते हुए इस बात पर दुख व्यक्त किया था कि निर्दोषों की रक्षा करने में सरकार और प्रशासन विफल रहे। उन्होंने लिखा था कि गुजरात दंगों में धर्म की हत्या कर दी गई थी। जो लोग निर्दोष नागरिकों की रक्षा करने में विफल रहे हैं। वे अधर्म के दोषी हैं। क्या श्री जयशंकर अपने पिता की लेखनी और विचारों को भी गलत या राजनीति से प्रेरित बताएंगे। भारत के विदेश मंत्री को कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का चीन के मुद्दे पर सवाल उठाना भी नागवार गुजर रहा है। राहुल गांधी बार-बार पूछते हैं कि प्रधानमंत्री चीन का नाम क्यों नहीं लेते।

हिंदी भाषा साहित्य को वैश्विक स्तर पर किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं

संजीव ठाकुर

> वर्तमान परिस्थितियों एवं समय काल मैं पूरे विश्व में 45 करोड़ लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा है। इसकी सरलता एवं सहजता विश्व के लोगों को अत्यंत प्रभावित भी करती है। हिंदी के विद्वानों,शिक्षाविदों, लेखकों, रचनाकारों और युवा लेखकों द्वारा हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम भूमिका भी निभाई है।

हिंदी भाषा करोड़ों भारतीय के दिलों में बसी हुई भाषा है। हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहां भी है ष्राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक हैष् हिंदी की सार्वभौमिक स्वीकार्यता के कारण ही भारतीय राजनेताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषा विदेशों में जितनी फल फूल रही है बल्कि हिंदी बोलने वाले भारतवंशी कई देशों के राष्ट्र प्रमुख भी हैं जैसे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, मॉरीशस के राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन, पुर्तगाल के एंटोनियो कोष्टा प्रधानमंत्री, श्री इरफान गुयाना के राष्ट्रपति, सुरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी, और सेसिल के राष्ट्रपति रामखेलावन पदस्थ हैं। इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के अलावा अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी हिंदी के विस्तार का बड़ा माध्यम बना हुआ है। हिंदी मूलतः बड़ी विशाल एवं आसानी से बोली जाने वाली, लिखी जाने वाली भाषा है। भारत की भौगोलिक विशालता और विविधता के बावजूद हिंदी सर्व स्वीकार्य और देश की सर्व सम्मत भाषा है। यह अलग बात है कि अभी तक संवैधानिक रूप से इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो पाया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय आंदोलनकारियों ने यह महसूस किया की एकमात्र हिंदी भाषा ही ऐसी भाषा है जो दक्षिण के कुछ क्षेत्र को छोड़कर पूरे देश की संपर्क भाषा है। भारत के संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। पर हिंदी भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो भारत में विभिन्न भाषा भाषाई नागरिकों के मध्य विचार विनिमय और संपर्क के लिए एक बड़ा सहारा है। हिंदी के विशाल स्वरूप को मद्दे नजर रख पूर्व राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी ने भी कहा ष्हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का या भाषा का बहिष्कार नहीं कियाष् यह शब्द हिंदी की पवित्रता और व्यापकता को इंगित करते हैं। वर्तमान परिस्थितियों एवं समय काल मैं पूरे विश्व में 45 करोड़ लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा है। इसकी सरलता एवं सहजता विश्व के लोगों को अत्यंत प्रभावित भी करती है। हिंदी के विद्वानों,शिक्षाविदों, लेखकों, रचनाकारों और युवा लेखकों द्वारा हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम भूमिका भी निभाई है। कई नामचीन विद्वान लेखक जिन्होंने हिंदी को वैश्विक भाषाई शिखर पर पहुंचाया है। इसी अनुक्रम में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमतेन हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का निर्णय भी लिया गया था। और हिंदी दिवस मनाने का एकमात्र उद्देश्य राजकीय कार्यालयों इसके व्यापक प्रचार प्रसार एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की ही है। हिंदी भाषा को पूरे विश्व में द्वितीय भाषा के रूप में माना जाता है। हिंदी नए वैश्विक स्तर पर अपने चलन के कारण अंग्रेजी भाषा को भी काफी पीछे छोड़ दिया है। आज हिंदी भाषा का कंप्यूटर,इंटरनेट ई बुक, सोशल मीडिया, विज्ञापन, टेलीविजन रेडियो आदि क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जा रहा है। भारत की विशाल जनसंख्या विदेशी व्यापारियों के लिए एक बड़ा उपभोक्ता बाजार है। यही कारण है कि विदेशी कंपनियां अपने सभी विज्ञापनों एवं सामानों में हिंदी भाषा का उपयोग कर भारतीय जनमानस को अपने उत्पादों के प्रति आकर्षित करना चाहती है।यही वजह है कि हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार भी इसी माध्यम से हो रहा है। विदेशों में भारतीय फिल्मों ने भी हिंदी का बड़ा और वृहद प्रचार प्रसार किया है। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, रूस मैं निवासरत भारतीय लोग हिंदी के प्रचार में निरंतर लगे हुए हैं। वहां हिंदी बोली तथा समझी जाती है। एनी बेसेंट ने सत्य कहा है कि भारत के विभिन्न प्रांतों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में जो भाषा सबसे प्रभावशाली बन कर सामने आती है वह है हिंदी, जो हिंदी जानता है पूरे भारत की यात्रा कर हिंदी बोलने वाला से हर तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भी अपने सामानों को बेचने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करना पड़ रहा है। भारत में कुछ काले अंग्रेज लोग जो सिर्फमहानगरों में अंग्रेजी को ही महत्त्व देते हैं, उन्हें इस बात को समझ जाना चाहिए की भविष्य में हिंदी का भविष्य वैश्विक स्तर पर उज्जवल है। और उन्हें हिंदी भाषा बोलने में शर्म नहीं आनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है वह जरूर बड़ी कंपनियों मैं विदेश में नौकरी दिलाने का माध्यम बन सकती है, पर हिंदी देश का गौरव और नागरिकों की आत्माओं में बसी एक पवित्र धारा है। अंग्रेजी भाषा रोजगार मूलक जरूर हो सकती है, पर केवल इसी कारण हिंदी की अवहेलना और उपेक्षा किसी भी स्तर पर तर्कसंगत नहीं है। भारतीयों को हिंदी के आत्म गौरव को विस्मृत नहीं करना चाहिए। हिंदी देश को भावनात्मक एकता के सूत्र में बांधे में सक्षम भारत की एकमात्र सशक्त भाषा है। हिंदी की गहराई तथा विशालता किसी बात से इंगित होती है कि भारतीय ग्रंथों और बड़े मूर्धन्य लेखकों की किताबों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया गया है । और हिंदी की रामायण गीता रामचरितमानस वैश्विक स्तर पर पढ़ी जाती है। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर शीर्ष में सम्मान देने की आवश्यकता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने हिंदी की प्रगति के लिए कुछ पंक्तियां कही है जो आज भी उल्लेखनीय है, ष्निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बृज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल। जय हिंदी जय हिंदुस्तान हिंदी भाषा अमर रहे।

उत्तराखंड में भूकम्प की दस्तक

आदित्य नारायण

दुनिया में कितना भी कोई शक्तिशाली क्यों न हो लेकिन प्रकृति से ज्यादा महाबली कोई नहीं होता। मानव प्रकृति का आनंद तो उठाना चाहता है लेकिन प्रकृति का हर चेहरा हमेशा खूबसूरत नहीं होता। प्राकृतिक आपदाओं के सामने विज्ञान भी असहाय नजर आता है। घ्वैज्ञानिक भूकम्प की चेताघ्वनियां देते रहते हैं और आपदाओं के संबंध में गहन अध्ययन करते हैं। भूकम्प कब आएगा इसका समय और वर्ष बता पाने में वे भी अब तक असफल हैं। 6 फरवरी को तुर्किये और सीरिया में धरती ऐसे हिली कि सब कुछ भरभराकर ध्वस्त हो गया। भूकम्प अपने पीछे छोड़ गया तबाही के मंजर। भूकम्प विज्ञानियों को पहला संकेत उनके उपकरण पर दिखे फ्लैश से मिला लेकिन यह संदेश भी भूकम्प शुरू होने के बाद मिल पाता है। फ्लैश मिलने के कुछ ही घंटे बाद तुर्किये और सीरिया में 7.8 की तीव्रता वाला भूकम्प बेहद खतरनाक साबित हुआ। इससे स्पष्ट है कि भूकम्प की तारीख और समय की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती और विनाश कई कारकों पर घ्निर्भर करता है। क्योंकि एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे भौगोलिक क्षेत्रों की रचना भिन्न होती है। अब देश के वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि उत्तराखंड में भी तुर्किये जैसा भूकम्प आ सकता है। इससे न केवल उत्तराखंड के लोग खौफमें हैं, बल्कि पूरा देश चिंतित है। भूकम्प की भविष्यवाणियां धार्मिक बाबा और ज्योतिषी भी करते रहते हैं लेकिन इस बार चेतावनी राष्ट्रीय भू-भौतकीय अनुसंधान संस्थान में भूकम्प विज्ञान के मुख्य वैज्ञानिक डाक्टर एन. राव ने जारी की है। डा. राव का कहना है कि उत्तराखंड क्षेत्र में नीचे की स्तह में काफी तनाव बन रहा है। यह भूगर्भीय तनाव एक बड़े भूकम्प आने के बाद ही खत्म हो पाएगा लेकिन वे भूकम्प की तारीख और समय की सटीक भविष्यवाणी नहीं कर सकते। डा. राव ने कहा कि धरती के साथ क्या-क्या हो रहा है ये निर्धारित करने के लिए वेरियोमेट्रिक जीपीएस डाटा प्रोसेसिंग विश्वसनीय तरीकों में से एक है। वेरियोमीटर घ्विभिन्न जगहों पर पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्रघ्में अंतर को मापते हैं। उन्होंने कहा कि हमने उत्तराखंड के आसपास हिमालयी क्षेत्र में लगभग 80 भूकम्पीय स्टेशन स्थापित किए हैं। हम इसकी रियल टाइम मॉनिटरिंग कर रहे हैं। हमारा डेटा दिखाता है कि इन इलाकों में भूगर्भीय तनाव काफी समय से इकट्ठा हो रहा है। हमारे पास हिमालयी क्षेत्र में जो जीपीएस नेटवर्क है, उनके प्वॉइंट हिल रहे हैं। यह धरती की सतह के नीचे होने वाले बदलावों का संकेत दे रहे हैं। उत्तराखंड में कुछ समय बाद चारधाम यात्रा शुरू होने वाली है। इस यात्रा में लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। भारत क्योंकि ईश्वर में आस्था रखने वालों का देश है। इसलिए मोक्ष की कामना लिए श्रद्धालु उमड़ पड़ते हैं। बदरीनाथ और केदारनाथ जैसे तीर्थ स्थलों के रास्ते में जोशीमठ में फिर से जमीन धंसने, सड़कों पर दरारें पड़ने और पहाड़ दरकने की खबरें आ रही हैं। उससे सरकार की चिंताएं भी बढ़ गई हैं। प्रशासन भले ही कितना भी सतर्क क्यों न हो वह प्रकृति का सामना नहीं कर सकता। अकेला जोशीमठ शहर ही नहीं जो ढह रहा है, हिमाचल के मंडी जिले के दो गांवों में भी भूमि दरकने से मकानों में दरारें आ रही हैं। हिमालय का क्षेत्र जो जम्मू-कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक फैला हुआ है वहां भी अधिक तीव्रता का भूकम्प आने की सम्भावना है। यह समस्या किसी एक राज्य या जिले की न होकर हिमालय की पहाड़ियों पर बसे तमाम शहरों की है। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि बड़ी परियोजनाओं को अंजाम देने के लिए गैर वैज्ञानिक तरीके से पहाड़ों को लगातार काटा जा रहा है जिससे परिस्थितियों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। सड़कों, सुरंगों, पनबिजली परियोजनाओं को तब तक अनुमति नहीं मिलनी चाहिए जब तक पारिस्थितिकी से जुड़ी चिताओं का समाधान नहीं हो जाता। उत्तराखंड के राष्ट्रीय राजमार्ग-7 पर जोशीमठ से ऋषिकेश के बीच 247 किलोमीटर के क्षेत्र को वैज्ञानिकों ने भूसंख्लन की दृष्टि से अति संवेदनशील माना है। उत्तराखंड पहले भी प्राकृतिक आपदाएं झेल चुका है। केदारनाथ त्रासदी तो न भूलने वाली त्रासदी है। केदारनाथ त्रासदी के वक्त कहा गया था कि भगवान रुद्र नाराज हैं। रुद्र को भगवान शिव का अवतार माना जाता है और भगवान शिव विध्वंस के देव हैं। धार्मिक आस्था रखने वाले श्रद्धालु जल प्रलय के लिए भगवान रुद्र की नाराजगी मानते हैं। सवाल यह है कि प्रकृति अगर नाराज हुई तो क्यों हुई। इसका सीधा कारण यही है कि मनुष्य ने प्रकृति से बहुत खिलवाड़ किया है। इससे पहले 1720 में कुमाऊं भूकम्प और 1803 में गढ़वाल भूकम्प, 1991 और 1999 में उत्तरकाशी और चमोली में चार बड़े भूकम्प झेले है। पहाड़ी शहरों के लोगों का जीवन सुरध्क्षित करने के लिए दृढ़ संकल्प की जरूरत है। साथ ही पर्यावरणीय मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सख्त कदम उठाने की जरूरत है। पहाड़ों की संवेदनशीलता को देखते हुए निर्माण,सतर्कता से किया जाना चाहिए। हिमालय की पर्वत शृंखलाओं को बचाने से ही लोगों के जीवन की सुरक्षा की जा सकती है।

क्या जबान संभाल कर बोलने का नियम सिर्फजनता के लिए है

क्या पवन खेड़ा प्रकरण से सबक लेंगे नेता

नीरज कुमार दुबे

राजनीतिज्ञ अपनी विश्वसनीयता खुद गंवा रहे हैं लेकिन इसके बावजूद उन पर कोई असर नहीं होता क्योंकि उनके इर्दगिर्द मौजूद लोग उन्हें यह अहसास कराते हैं कि आप टीवी पर चमक रहे हैं, अखबार में छप रहे हैं, सोशल मीडिया पर छाये हैं और जनता आपके पक्ष में दिख रही है। राजनीति में एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने का सिलसिला चलता रहता है। लेकिन नेताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह जो आरोप लगा रहे हैं उसका कोई आधार हो। निराधार आरोप लगाने से अनावश्यक विवाद खड़े होते हैं और फिर जब कानून का डंडा चलता है तो गलतबयानी या झूठे आरोप लगाने के लिए नेताओं को माफी मांगनी पड़ती है। विपक्षी नेता मुद्दों के आधार पर वर्तमान केंद्र सरकार को नहीं घेर पा रहे हैं तो झूठे आरोप लगाकर या अमर्यादित बयान देकर सनसनी फैलाते हैं और सुर्खियों में रहना चाहते हैं। जरा, कुछ उदाहरणों के जरिये आपको अपनी बात समझाते हैं। राहुल गांधी ने राफेल विमान सौदा मामले में प्रधानमंत्री पर झूठे आरोप लगाये, मामला सुप्रीम कोर्ट पहुँचा तो राहुल गांधी ने सिर्फखेद जताकर बच निकलने की कोशिश की लेकिन सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री पर आरोप लगाने के लिए बिना शर्त माफी मांगी। देखा जाये तो कांग्रेस में सिर्फराहुल गांधी ही माफीवीर नेता नहीं हैं बल्कि अब ऐसे नेताओं की संख्या पार्टी में बढ़ती जा रही है। हम आपको यह भी याद दिला दें कि कांग्रेस सरकार के दौरान सूचना और प्रसारण मंत्री रहते हुए मनीष तिवारी तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष नितिन गडकरी पर झूठे आरोप लगाने के चलते मुंबई की कोर्ट में माफी मांग चुके हैं। अब कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने प्रधानमंत्री के स्वर्गीय पिता के लिए जो अपमानजनक शब्द प्रयोग किये उसके चलते उनके खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गयी, मामला गिरफ्तारी और कोर्ट तक पहुँचा तो वह भी बिना शर्त माफी के लिए तैयार हो गये। सिर्फ कांग्रेस में ही माफीवीर नेता हों ऐसा नहीं है। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल भी कई नेताओं पर आरोप लगा कर बिना शर्त माफी मांग चुके हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल स्वर्गीय अरुण जेटली, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और भाजपा के नेता रहे अवतार सिंह भड़ाना पर आरोप लगा कर बिना शर्त माफी मांग चुके हैं। अरुण जेटली से तो आम आदमी पार्टी के कई अन्य नेताओं ने भी झूठे आरोपों के लिए माफी मांगी थी। देखा जाये तो नेताओं का अपने बयान से पलटना या यह कहना कि उनके बयान को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया, यह कोई नई बात नहीं है। लेकिन नेताओं को समझना चाहिए कि ऐसी स्थिति क्यों आती है कि उन्हें अपने बयान पर खेद जताना पड़े या अदालत में मानहानि के मुकदमे के डर से बिना शर्त माफी मांगनी पड़े? इस सबसे राजनीतिज्ञ अपनी विश्वसनीयता खुद गंवा रहे हैं लेकिन इसके बावजूद उन पर कोई असर नहीं होता क्योंकि उनके इर्दगिर्द मौजूद लोग उन्हें यह अहसास कराते हैं कि आप टीवी पर चमक रहे हैं, अखबार में छप रहे हैं, सोशल मीडिया पर छाये हैं और जनता आपके पक्ष में दिख रही है। बहरहाल, पवन खेड़ा भले अपनी पार्टी का पक्ष प्रखरता के साथ रखते हों लेकिन उन्हें दूसरे दलों पर हमलावर होते हुए अपने पर काबू भी रखना चाहिए। हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि हाल ही में उनकी ओर से कही गयी कई बातों पर विवाद हुआ। एक केंद्रीय मंत्री के परिजन से कथित रूप से जुड़े मुद्दे को उन्होंने जिस तरह पेश किया था उसके खिलाफउनके खिलाफमानहानि का मामला दर्ज कराया गया था और माफी की मांग की गयी थी। यह प्रकरण अन्य नेताओं के लिए बड़ा सबक है क्योंकि कानून का पालन करना और जबान संभाल के बोलने का नियम सिर्फ जनता के लिए ही नहीं बल्कि नेताओं के लिए भी होता है।

बीबीसी, हिंडनबर्ग व जॉर्ज सोरोस तो सामने आ गये, मोदी विरोधी अगली साजिश क्या है

राकेश सैन

वर्तमान में भारत अपनी संस्कृति, विज्ञान और टेक्नोलॉजी के साथ जिस तरह से आगे बढ़ रहा है उससे कुछ शक्तियों को पेचिश होना स्वाभाविक है। दुनिया की महाशक्तियों को लग रहा है कि आज का भारत उनकी हां में हां नहीं मिला रहा। एक जुलाई, 2021 को 'न्यूयार्क टाइम्स' ने दक्षिण एशिया व्यवसायी संवाददाताओं के लिए आवेदन मांगे। इसके लिए शर्तों में लिखा कि अभ्यर्थी ऐसा हो जो भारत सरकार के विरुद्ध लिखे और वहां सत्ता परिवर्तन में योगदान दे। विदेशी मीडिया के एक वर्ग में मोदी, भारत और हिन्दू विरोध का यह छोटा-सा उदाहरण है। इसी साल के आरम्भ में कुछ चिन्तकों ने आशंका जताई कि 2023 चुनावी वर्ष है और इसमें कई तरह के षड्यन्त्र सामने आ सकते हैं। चेतावनी के एक-डेढ़ माह के भीतर ही जिस क्रम से बीबीसी लन्दन की गुजरात दंगों पर दस्तावेजी फिल्म, उद्योगपति गौतम अडानी पर हिण्डनबर्ग की रिपोर्ट और भारत में सत्ता परिवर्तन को लेकर अमेरिकी अरबपति जार्ज सोरोस की योजना सामने आई, उससे अब प्रश्न पूछा जाने लगा है कि इन तीनों के बाद, अब आगे क्या? गत सप्ताह 'द सण्डे गार्जियन' समाचार पत्र में प्रकाशित रिपोर्ट में दावा किया गया है कि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को हटाने, चुनावों में सत्ता परिवर्तन को लेकर कुछ देसी-विदेशी शक्तियां पिछले तीन महीनों में लन्दन से लेकर दिल्ली तक अलग-अलग बैठकें कर चुकी हैं। बैठकों में जिन मुद्दों पर चर्चा हुई उनमें मोदी सरकार की कमजोरियों को सामने लाना, सरकार के विरुद्ध नकारात्मक विमर्श गढ़ना, चुनाव से छह माह पहले सरकार के खिलाफ बड़ा अभियान चलाना शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसमें मीडिया, सूचना तकनॉलोजी विशेषज्ञों, अभियानवादियों को साथ लेने, ऑनलाइन व पारम्परिक शैली से काम करने की जरूरत पर जोर दिया गया। रिपोर्ट का दावा है कि इसके लिए भारतीय मूल के लोगों और अन्य विदेशी संगठनों की तरफ से कोष उपलब्ध कराया जा रहा है। सजग होने की बात है कि अब इस तरह के घटनाक्रम भी सामने आ रहे हैं, जो उक्त आशंका को बल प्रदान करते हैं। हाल ही में बीबीसी ने दो धारावाहिकों की एक दस्तावेजी फिल्म बनाई, इसमें साल 2002 के गुजरात दंगों के दौरान वहां के मुख्यमन्त्री के रूप में प्रधानमन्त्री मोदी के कार्यकाल पर निशाना साधा, जबकि वास्तविकता ये है कि लाख कोशिशों के बावजूद देश की न्यायिक प्रणाली उन्हें दोषमुक्त कर चुकी है। दूसरे प्रकरण में अडानी समूह के खिलाफ हिण्डनबर्ग रिपोर्ट आई। पिछले कुछ सालों में अडानी समूह ने देश-विदेश में अपना प्रभाव जमाया और वैश्विक विस्तार अभियान को आगे बढ़ाया। यह समूह भारत की पहचान को दिनों-दिन और सुदृढ़ करने में आगे बढ़ रहा था। उस पर एक अमेरिकी कम्पनी हिण्डनबर्ग की रिपोर्ट आई और अडानी समूह की चूलें हिल गईं। हाल के कुछ वर्षों में दुनिया में जिस गति से भारत विरोधी विमर्श को फैलाया जा रहा है उसी की श्रृंखला के रूप में इस रिपोर्ट को देखा जा रहा है। तभी तो अमेरिका के वाल स्ट्रीट जनरल ने इस प्रकरण पर अपनी रिपोर्ट में लिखा- हिण्डनबर्ग ने 'हिन्दू राष्ट्रवादी प्रधानमन्त्री' के आर्थिक विकास के गुजरात मॉडल से भरोसा हिला दिया है और 'यह भारतीय उद्योग-जगत के बारे में बहुत कुछ कहता है।' तीसरा- सन्दिग्ध चरित्र के अमेरिकी अरबपति जॉर्ज सोरोस की भारत में सत्ता परिवर्तन की योजना सामने आना अपने आप में बहुत कुछ कहता है। वर्तमान में भारत अपनी संस्कृति, विज्ञान और टेक्नोलॉजी के साथ जिस तरह से आगे बढ़ रहा है उससे कुछ शक्तियों को पेचिश होना स्वाभाविक है। दुनिया की महाशक्तियों को लग रहा है कि आज का भारत उनकी हां में हां नहीं मिला रहा। अमेरिका से हथियार खरीदने की जगह भारत ने रूस को चुना। आज भारत की डिजीटल भुगतान प्रणाली दुनिया में धूम मचा रही है। राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो अब तक लगभग 8 लाख करोड़ रुपये की नशीली दवाएं नष्ट कर चुका है तो परावर्तन निदेशालय भ्रष्ट लोगों से 1.2 लाख करोड़ रुपये का काला धन जब्त कर चुका है। भारत ने फाइजर और मॉडर्न से कोरोना वैक्सीन आयात नहीं की बल्कि स्वदेशी टीके विकसित कर विदेशी कम्पनियों के व्यवसायिक एकाधिकार को चुनौती दी।

संक्षिप्त समाचार

धूमधाम से मना भगवान 1008 श्री चंद्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

संवाददाता, लखनऊ। जैन धर्म के 8 वें तीर्थकर 1008 भगवान श्री चंद्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव रविवार को गोमतीनगर विशाल खंड जैन मंदिर में धूमधाम से मनाया गया। मन्दिर के मंत्री आलोक जैन ने बताया कि आज ही के दिन भगवान को निर्वाण प्राप्त हुआ था। भगवान के अभिषेक एवं पूजन के बाद निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। जिसमें महिलाओं ने सुंदर सूंदर निर्वाण लाडू बनाकर भगवान को अर्पित किये। गोमतीनगर महिला मंडल की सदस्य अनीता जैन, दीपाली, दीपिका, चंदना, डा अलका, जूली, शोभना, सपना आदि ने भाग लिया। मुख्य शांति धारा डा संजय राकेश एवं डा प्रदीप जैन द्वारा की गई और मुख्य लाडू गोमतीनगर जैन समाज द्वारा चढ़ाया गया। मंदिर के अध्यक्ष प्रदीप जैन, मंत्री आलोक, संदीप जैन, निकान्त, अमित,राकेश, अरविंद, वीरेंद्र जैन, जयकुमार, पंडित पीयूष आदि शामिल रहे। अन्त में स्वल्पाहार डा संजय राकेश परिवार द्वारा कराया गया।

प्रतिभा व गौरव सम्मान से सम्मानित होंगे साहू समाज के प्रतिभागी'

संवाददाता, लखनऊ। गोमती नगर स्थित जिला साहू समाज के संरक्षक श्री उमाकांत साहू जी के निवास स्थान पर जिला साहू समाज लखनऊ की बैठक आहूत की गई जिसकी अध्यक्षता कार्यवाहक अध्यक्ष गोविंद साहू ने की। अध्यक्ष रामपाल साहू ने बताया कि आगामी 26 मार्च को होली मिलन समारोह कार्यक्रम में साहू समाज से जुड़े हुए बच्चों को प्रतिभा सम्मान एवं सरकारी सेवा में कार्य स्वजातीय बंधुओं को गौरव सम्मान से सम्मानित किया जाएगा वहीं महामंत्री अनुराग साहू ने बताया कि इस वर्ष का होली मिलन समारोह युवाओं को समर्पित किया जाएगा इसलिए गौरव सम्मान एवं प्रतिभा सम्मान स्वजातीय बंधुओं को दिया जाएगा। इस बार का 26 मार्च को होली मिलन का कार्यक्रम शहीद स्मारक रोड स्थित गांधी भवन में आयोजित किया जाएगा जिसमें शहर के सभी साहू समाज के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया जा रहा है। बैठक में गोविंद साहू, रामपाल साहू, अनुराग साहू, संजय कुमार साहू,उमाशंकर साहू, श्याम गुप्ता गुप्ता, महेश साहू दद्दू, अश्वनी साहू, नरेश कांत, राजित राम गुप्ता, विश्वनाथ गुप्ता, शिव बरन लाल साहू, संतोष साहू, राजेंद्र प्रसाद साहू ,ओम प्रकाश साहू, माता प्रसाद साहू, विष्णु कुमार साहू उपस्थित रहे।

केंद्रीय संचार ब्यूरो की 5 दिवसीय चित्र प्रदर्शनी का केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर करेंगे उद्घाटन

संवाददाता, लखनऊ। केंद्रीय संचार ब्यूरो लखनऊ द्वारा आठ साल-सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण एवम नारी शक्ति विषय पर चित्र प्रदर्शनी के पूर्व प्रचार रथ को दूरदर्शन के पूर्व अपर महानिदेशक आर. पी .सरोज और केंद्रीय संचार ब्यूरो के निदेशक मनोज वर्मा लखनऊ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उपरोक्त विषय पर चित्र प्रदर्शनी, व्याख्यान ,गोष्ठी,सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 4 मार्च तक राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अलीगंज लखनऊ में होगा। प्रदर्शनी पूर्ण रूप से नि:शुल्क होगी। नेहरु युवा केंद्र के स्वयंसेवी मंच पर 2 मार्च को प्रदर्शन कर लोगों का मनोरंजन करेंगे। केंद्र सरकार के आठ साल-सेवा,सुशासन, गरीब कल्याण एवम नारी शक्ति विषय पर चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से भी लोगो को जागरूक किया जाएगा।

स्पीकर सतीश महाना के आवास पर विधायकों के लिए लंच, सीएम योगी और अखिलेश हुए शामिल

संवाददाता, लखनऊ। यूपी विधानसभा के स्पीकर सतीश महाना के आवास पर यूपी के विधायकों को लंच के लिए बुलाया गया है। लंच के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शामिल हुए हैं। वहीं समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव और शिवपाल यादव भी शामिल हुए हैं। सतीश महाना ने नई परंपरा के तहत लंच के लिए सबको आमंत्रित किया है। यूपी के 403 विधायकों को लंच के लिए बुलाया गया है।

सड़क पर युवक के हुक्का पीने का बीडियो वायरल,युवक ने असलहे के साथ बनाई रील

लखनऊ,26 फरवरी 2023 (यूएनएस)। सुशांत गोल्फसिटी इलाके में गाड़ी पर खड़े होकर हुक्का पीने का वीडियो वायरल होने के बाद अब गोसाईगंज इलाके में एक युवक के हुक्का पीने का वीडियो वायरल हो रहा। जिसमें युवक सड़क पर मेज सजाकर दोस्तों के साथ हुक्का पीते हुए दिखाई दे रहा है। दरअसल, लखनऊ के गोसाईगंज कोतवाली क्षेत्र के अमेठी इलाके में सड़क पर हुक्का पीने का वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में 5-6 युवक हुक्का पीते हुए दिखाई दे रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, वायरल वीडियो कुछ दिनों पुराना है। जिसमे पांच से छह युवक सड़क पर ही मेज सजाकर हुक्के के कश उड़ाते हुए दिखाई दे रहे हैं। एक वीडियो में मोहम्मद तौहीद नाम का युवक बुलेट पर बैठ कर हुक्का पी रहा। पीछे खड़ी एसयूवी गाड़ी पर चेयरमैन लिखा है। एक अन्य वीडियो में एक युवक टेबल पर असलहा रख कर मोबाइल फोन की ओपनिंग कर रहा है। एक वीडियो में युवक ऑडी गाड़ी की छत पर बैठ कर रील बनाता है। मोहम्मद तौहीद नाम के युवक के रील सोशल मीडिया में जमकर वायरल है। पुलिस के मुताबिक, वायरल वीडियो कुछ दिनों पुराने हैं। मामले की जांच की जा रही है। गोसाईगंज कोतवाली प्रभारी दीपक कुमार पांडे ने बताया कि वायरल वीडियो कुछ दिनों पुराना है। वीडियो में दिख रहा युवक अमेठी नगर पंचायत अध्यक्ष का रिश्तेदार है। मामले की जांच की जा रही।

इंसानियत की सेवा करना सबसे उत्तम सेवा है': सलिल कुमार

संवाददाता, लखनऊ। ऑल इंडिया पयामे इंसानियत फोरम लखनऊ यूनिट द्वारा मौलाना अजहर नदवी साहब की अगुवाई मे एक आना फंड स्कूल के सामने तिराहे में एक विशाल निशुल्क नेत्र एवं दन्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, इस मौके पर नेत्र चिकित्सक डॉक्टर सैयद शारिक साहब और उनके सहयोगी डॉ कलीमुल्लाह, दंन्त चिकित्सक डॉ0 मोहम्मद अजीम और उनकी पूरी टीम (विटल डेंटल हॉस्पिटल एवं इमप्लांट सेंटर देवा रोड) एवं दंत चिकित्सक डॉक्टर अहदुल हक (केजीएमयू) और फिजियोथैरेपिस्ट डॉक्टर शहबाज आदि मौजूद थी उन्होंने मरीजों की जांच पड़ताल के बाद तकरीबन 250 मरीजों के दवा दी गई इस मौके पर मौलाना अजहर उल इस्लाम नदवी साहब ने कहा हमारा मकसद इंसानियत की खिदमत के साथ-साथ लोगों में आपस में जोड़ पैदा करना मोहब्बत और भाईचारे कायम करना समाज की दूरियों को खत्म करना एक अच्छा समाज बनान बनाना इलाके के पार्षद जनाब विनोद सिंघल साहब ने कहा प्रेम इंसान ऑल इंडिया पयामे इंसानियत फोरम के काम सराहनीय है पहले भी हम उनके साथ प्रोग्राम में शरीक हो चुके हैं हम सदैव उनके साथ हैं आप जब भी हमें याद करेंगे हम अपने लिए करेंगे गौरव महसूस करेंगे, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ शहबाज साहब ने कहा आप लोगों के चिकित्सा शिविर में आकर बहुत खुशी हुई और जहां भी भरो शिविर लगाए हम आपके साथ रहेंगे हमें खिदमत का मौका दें। इस मौके पर डॉ वकार शकूर डॉ गुंचा खान, हुसैन अहमद, मोहम्मद वसीम, शफक अल्वी ,मिर्जा इसरार हुसैन, एडवोकेट कामरान, सऊद, नोमान, मुफ्ती मशकूर हुसैन, मेहंदी हसन, हाफिज यामीन, अनीस अहमद, कमर, रेहान, पप्पू, जईम खान, अरमान नदवी, साइम और मुफ्ती अबुल कासिम नदवी आदि मौजूद थे।

नगर विकास मंत्री ने नगरों की साफ-सफाई हेतु की समीक्षा

1 मार्च से चिन्हित नगरीय पार्कों में शुरू होगें योगा दिवस के कार्यक्रम

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने आयुष और नगर विकास विभाग के अधिकारियों के साथ नगरों की साफ-सफाई, सुंदरीकरण और बेहतर व्यवस्थापन के साथ ही आयुष चिकित्सा व योग को जन जन तक पहुंचाने के लिए 1 मार्च से चिन्हित नगरीय पार्कों में शुरू हो रहे। योग दिवस व आयुष चिकित्सा कार्यक्रम के लिए आवश्यक तैयारियों के संबंध में नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने जल निगम के फील्ड हॉस्टल संगम में नगर विकास, सूडा एवं आयुष विभाग के एक हजार से अधिक अधिकारियों के साथ वर्चुअल बैठक की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के संकल्प को साकार करने के लिए स्वांत: सुखाय की अवधारणा के तहत लोगो को स्वच्छ वातावरण और स्वस्थ्य जीवन प्रदान करने हेतु आयुष चिकित्सा और योग को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रदेश के सभी निकायो के चिन्हित पार्कों में आयुष चिकित्सा एवं योग दिवस कार्यक्रम प्रतिदिन आयोजित किया जायेगा। यह कार्यक्रम नगर विकास, आयुष विभाग और आवास विकास के सहयोग से आयोजित होंगे। सभी जनपदों में जिलाधिकारी की अध्यक्षता बनाई गई कमेटी इस कार्यक्रम की नियमित मॉनीटरिंग भी करेगी। योग दिवस कार्यक्रम आयोजित कराने के लिए प्रत्येक नगर निगम में ऐसे 3 पार्क, नगरपालिका परिषदों में 2 पार्क तथा नगर पंचायतों में 1 पार्क चिन्हित करने के निर्देश अधिकारियों को दिए गए हैं। जनभागीदारी बढ़ाने के लिए इसका व्यापक प्रचार-प्रसार कराने को भी कहा गया। योग दिवस कार्यक्रम के दौरान ऐसे सभी पार्कों में आयुष, यूनानी और होम्योपैथी के चिकित्सकों की टीम भी लोगों का स्वास्थ्य चेकअप करने के पश्चात दवा देने के लिए उपलब्ध रहेगी। योगा के लिए चटाई की व्यवस्था हो, चिकित्सकों के बैठने और दवाईयों के लिए कुर्सी मेज की व्यवस्था पर ध्यान देंगे। उन्होंने बताया कि आयुष एवं नगर विकास विभाग का इस कार्यक्रम में उत्तरदायित्व निर्धारित करने के लिए इस संबंध में दोनों विभागों के बीच एमओयू भी किया जाएगा। साथ ही निदेशक सूडा तथा निदेशक नगरीय निकाय को निर्देश दिए कि अपने विभागों के कार्यक्रमों की नियमित मॉनिटरिंग करें और योजनाओ को जमीन पर उतारने के लिए कार्ययोजना को और व्यवस्थित ढंग से संचालित करे। नगर आयुक्त लखनऊ इंद्रजीत सिंह को निर्देश दिए कि लखनऊ के 1090 चौराहे में बनाए गए सेल्फी प्वाइंट आई लव यू लखनऊ में से आई लव पिछले 10 दिनों से गायब है, इसे जितना जल्दी हो सकें ठीक कराएं। बैठक में अपर मुख्य सचिव आयुष आराधना शुक्ला,निदेशक सूडा डॉ. अनिल कुमार पाठक, निदेशक स्थानीय निकाय नेहा शर्मा, विशेष सचिव हरिकेश चौरसिया, अपर निदेशक डा. असलम अंसारी, उप निदेशक डा. सुनील यादव उपस्थित थे।

28 फरवरी को लखनऊ विकास प्राधिकरण में आयोजित होगा नागरिक सुविधा दिवस

संवाददाता

लखनऊ। मंण्डलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने कहा है लखनऊ के रहने वाले लोगों को प्रतिदिन जीवन से जुड़ी समस्याओं तथा बिजली, पानी, सड़क, भवन निर्माण, जल निकासी, यातायात, परिवहन एवं प्रदूषण का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के निराकरण हेतु कार्य किए जा रहे है। इस नागरिक सुविधा दिवस का आयोजन शहरी क्षेत्र के नागरिकों की मूलभूति समस्या के सफल समाधान के नागरिक सुविधा दिवस का आयोजन किया जा रहा है। सामान्य जन मानस को दिन-प्रतिदिन के जीवन यापन से जुड़ी हुई छोटी-छोटी समस्याओं के निराकरण हेतु कई-कई विभागों में चक्कर लगाना पड़ता है। साथ ही कहा कि शहरी क्षेत्र में नागरिकों की नागरिक सुविधाएं से जुड़ी समस्याओं का गुणवत्तापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग के निस्तारण, अनुश्रवण एवं समन्वय हेतु लखनऊ विकास प्राधिकरण के सभाकक्ष में प्रत्येक माह के अन्तिम मंगलवार को नागरिक सुविधा दिवस का आयोजन सुबह 10 बजे लेकर 2 बजे के मध्य किये जाने के निर्देश दिये है। जिसमें नागरिक सुविधाएं से जुड़े हुए विभाग के वरिष्ठतम अधिकारियों मौजूद रहेंगे। साथ ही अगले समाधान दिवस पर सर्वप्रथम पूर्व समाधान दिवस में प्राप्त हुई शिकायतों के निस्तारण की सघन समीक्षा की जायेगी। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए लखनऊ विकास प्राधिकरण को नोडल विभाग बनाया गया है। लखनऊ विकास प्राधिकरण इस कार्यक्रम का आयोजन तथा कार्यक्रम से संबंधित विभागों को अपने स्तर से सूचित कर प्राप्त अभिलेखों का रख रखाव भी अपने स्तर से करेगें। सुविधा दिवस में जिलाधिकारी लखनऊ, उपाध्यक्ष लखनऊ विकास प्राधिकरण, लखनऊ एवं नगर आयुक्त, नगर निगम लखनऊ मौजूद रहेंगे।

सपा विधायक पूजा पाल और उमेश की पत्नी के बीच तीखी बहस, अतीक से मिलीभगत का लगा आरोप

संवाददाता

लखनऊ। सपा विधायक राजू पाल की हत्या के 18 साल बाद मुख्य गवाह उमेश पाल की शुक्रवार शाम घर के अंदर घुसकर ताबड़तोड़ गोलियां बरसाकर हत्या कर दी गई। मामले में सपा विधायक पूजा पाल जब दिवंगत उमेश के घर पहुंची तो उमेश की पत्नी और उनके बीच बहस हो गई। अतीक अहमद के पक्ष में गवाही करने के मामले को लेकर ही दोनों के बीच बहस होने की बात कही जा रही है।उमेश के परिजनों ने पूजा पाल पर अतीक से मिलीभगत का आरोप लगाया है। पूजा पाल ने कहा की उमेश पाल के घर अतीक के लोग आते थे। पूजा पाल और उमेश में सालों से अनबन थी। उमेश 18 साल से पूजा पाल के पूर्व पति राजू पाल के लिए इंसाफकी लड़ाई लड़ रहे थे, लेकिन आरोपी अतीक गैंग से कानूनी लड़ाई के चलते उमेश अतीक के निशाने पर थे। 25 जनवरी 2005 को बीएसपी के तत्कालीन एमएलए राजू पाल की हत्या हुई थी। उमेश पाल हत्याकांड के चश्मदीद गवाह थे। 2 बार बीएसपी के टिकट पर इलाहाबाद शहर पश्चिमी सीट से पूजा पाल विधायक बनी थी। पूजा पाल ने सपा नेता से शादी कर सपा की सदस्यता ले ली थी। 2022 के विधान सभा चुनाव में पूजा पाल सपा के टिकट पर कौशाम्बी के चायल से विधायक बनी थी।उमेशपाल की हत्या की मामले में धूमनगंज कोतवाली पुलिस ने गैंगस्टर अतीक अहमद, उसके भाई अशरफऔर पत्नी समेत 9 लोगों के खिलाफ हत्या, हत्या की साजिश समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस ने कार्रवाई उमेश पाल की तहरीर पर की है। इस मामले में पुलिस पहले ही अतीक अहमद के दोनों बेटों समेत सात लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

हिम्मत और सूझबूझ से बची वृद्धा की जान

15 मिनट तक तेंदुए से लड़ती रही बुजुर्ग महिला, ग्रामीणों की मदद से बची जान

तेंदुए को फंसाने के लिए पिंजरा लगाया है : वन अधिकारी

संवाददाता

लखनऊ। हिम्मत मर्दा, मदद खुदाश्की कहावत को विजनौर की वृद्धा ने सच साबित करके दिखा दिया है। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के नगीना थाना क्षेत्र के फत्तेहपुर गांव में एक 60 बर्षीय बुजुर्ग महिला चमत्कारिक रूप से तेंदुए के हमले में बच गई। लोगों ने वन विभाग से तेंदुए को पकड़ने की अपील की है जो आसपास के गांवों में दहशत पैदा कर रहा है। घटना शनिवार देर शाम की उस वक्त की है जब महिला खेत से घर वापस लौट रही थी।उसी वक्त राजो देवी पर तेंदुए ने हमला कर दिया।करीब 15 मिनट तक वह तेंदुए से लड़ती रही। जान बचाने के लिए संघर्ष करते हुए मदद के लिए चिल्लायी। चीखें सुनकर आस-पास के लोग मदद के लिए दौड़ पड़े। उन्हें देखकर तेंदुआ भाग गया। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नगीना में महिला का इलाज चल रहा है, महिला को गंभीर चोटें आई हैं और गर्दन पर पंजे के गहरे निशान हैं। नगीना सीएचसी चिकित्सा प्रभारी डा. नवीन कुमार ने बताया कि महिला के चेहरे व गर्दन पर पंजे के निशान हैं। महिला को प्राथमिक उपचार दे दिया गया है। वन अधिकारी ने बताया कि वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची है।हमने तेंदुए को फंसाने के लिए पिंजरा लगाया है। इलाके में रहने वाले ग्रामीणों को भी सतर्क कर दिया गया है।इससे पहले नगीना थाना अंतर्गत किरतपुर गांव में 14 साल की लड़की अदिति को तेंदुए ने मार डाला था। हमले के समय अदिति अपनी मां कुसुम के साथ थी। वह दोनों साथ गांव से बाहर कुछ दूरी पर स्थित शिव मंदिर जा रही थी।अदिति को तुरंत नगीना सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।उसके बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए बिजनौर के सरकारी अस्पताल में भेज दिया गया।अदिति को गर्दन और पीठ में चोटें आई थीं।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में मनाया गया स्थापना दिवस

संवाददाता, लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय राजेंद्र नगर लखनऊ के स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं महाविद्यालय के संस्थापक स्व0बाबूजी दीन दयाल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ प्रारंभ हुआ. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पर्यटन राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश दयाशंकर सिंह उपस्थित रहे एवं विशिष्ट अतिथि डा नीरज बोरा विधायक लखनऊ उत्तर एवं विशिष्ट अतिथि डा शैलेश शर्मा, लिटिगेशन इंचार्ज सशक्त सेना बल प्राधिकरण उपस्थित रहे। अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ, स्मृति चिन्ह् और उत्तरीय से किया गया। द्वितीय कार्यक्रम के प्रारम्भ में माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी के मन की बात का 98वॉ एपिसोड़ विशिष्ठ अतिथि ने छात्राओं एवं शिक्षिकाओं के साथ स्मार्ट रूम में सुना इस अवसर पर मेधावी छात्राओं को मेडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। नवयुग रत्न बहुमुखी प्रतिभा की धनी सुहासिनी घोष को दिया गया एवं इस अवसर पर महाविद्यालय की पत्रिका जागृति के संयुक्तांक का विमोचन किया गया।

अयोध्या में मस्जिद निर्माण के लिए भू उपयोग परिवर्तन की मंजूरी जल्द मिलने की उम्मीद

संवाददाता

लखनऊ। उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर अयोध्या के धन्नीपुर में मस्जिद निर्माण के लिए मिली जमीन के उपयोग परिवर्तन को मंजूरी मिलने का इंतजार जल्द खत्म होने की उम्मीद है। उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर सरकार द्वारा अयोध्या जिले के धन्नीपुर गांव में दी गई पांच एकड़ जमीन पर इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन (आईआईसीएफ) ट्रस्ट द्वारा एक मस्जिद, अस्पताल, शोध संस्थान, सामुदायिक रसोई और पुस्तकालय का निर्माण कराया जाना है। इसके लिए भू-उपयोग परिवर्तन का मामला पिछले करीब चार महीने से अयोध्या विकास प्राधिकरण में लंबित है। लेकिन अगले हफ्ते इसे हरी झंडी मिलने की संभावना है। अयोध्या विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष और अयोध्या के मंडलायुक्त गौरव दयाल ने बताया कि प्राधिकरण इस मामले पर अगले हफ्ते निर्णय करेगा। उन्होंने कहा, ''शासन से इस बारे में निर्देश प्राप्त हो चुका है। हम सोमवार को इस मामले में विचार करेंगे। अगले हफ्ते इस पर निर्णय हो जाएगा।'' ट्रस्ट के स्थानीय न्यासी अरशद खान ने बताया कि अयोध्या जिले के धन्नीपुर गांव में एक मस्जिद, अस्पताल, शोध संस्थान, सामुदायिक रसोई और पुस्तकालय के निर्माण की मंजूरी के लिए जुलाई 2020 में अयोध्या विकास प्राधिकरण में आवेदन किया गया था। उससे कुछ ही दिन पहले राम मंदिर के लिए अनुमोदन दिया गया था। उसका आवेदन ऑफलाइन किया गया था। खान ने बताया, ''जब हमने भी आवेदन किया तो अयोध्या विकास प्राधिकरण ने कहा कि आप ऑफलाइन के बजाय ऑनलाइन आवेदन कर दें। ट्रस्ट द्वारा इसमें असमर्थता जताए जाने पर प्राधिकरण के लोगों ने ही अपने यहां के कर्मचारियों से कहकर आवेदन को ऑनलाइन कराया।

ऑनलाइन आवेदन होने से पोर्टल ने 15-16 अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांग लिए।'' उन्होंने बताया, ''एनओसी हासिल करते-करते ही एक साल गुजर गया। उसके बाद अयोध्या के तत्कालीन जिलाधिकारी नीतीश कुमार के संज्ञान में जब यह मामला आया तो उन्होंने अनापत्ति प्रमाण पत्र भेजवाने में मदद की। जब एनओसी आ गई तो पिछले साल अक्टूबर में भू-उपयोग परिवर्तन का मामला आ गया। इसे शासन में भेजा गया था। ऐसा बताया जा रहा है कि शासन की तरफसे अयोध्या विकास प्राधिकरण के पास लिखित में कुछ आया है।'' गौरतलब है कि उच्चतम न्यायालय ने राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मामले में नौ नवंबर 2019 को दिए गए अपने ऐतिहासिक फैसले में विवादित स्थल पर राम मंदिर बनवाने और मस्जिद निर्माण के लिए मुसलमानों को अयोध्या में किसी प्रमुख स्थान पर पांच एकड़ जमीन देने का आदेश दिया था। मस्जिद निर्माण के लिए गठित इंडो-इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन ट्रस्ट ने दी गई जमीन पर मस्जिद के साथ-साथ एक अस्पताल, सामुदायिक रसोई, पुस्तकालय और शोध संस्थान बनाने का ऐलान किया था। ट्रस्ट के सचिव अतहर हुसैन ने उम्मीद जताई थी कि भू-उपयोग परिवर्तन से संबंधित औपचारिकताएं पिछले साल नवंबर के अंत तक पूरी कर ली जाएंगी। उसके बाद दिसंबर में मस्जिद तथा अन्य सुविधाओं का निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा और दिसंबर 2023 तक मस्जिद का ढांचा तैयार कर लिया जाएगा।

होली के पारंपरिक गीतों पर संगीत की बयार में खोए दर्शक

संवाददाता

लखनऊ। एसिड अटैक पीड़ितो के लिए संचालित शीरोज हैंग आउट कैफे गोमतीनगर में रविवार को धुन बंजारा संस्था एवं जयबृज जी आर के फाउंडेशन द्वारा बसंत उत्सव एवं होली उमंगोत्सव का आयोजन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर नाबार्ड द्वारा शिरोज कैफे में स्वय सहायता समूह के उत्पाद प्रदर्शनी में आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी के मंच पर यह भव्य कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ एसिड अटैक पीड़ित बहनों के साथ गायिका पद्मा गिडवानी, कुमार केशव, फिल्म कलाकार देवेंद्र मोदी , संजीव तिवारी,फिल्म कलाकार दिनेश त्रिवेदी द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ भक्ति शुक्ला के गीत बरसाने मा खेले फाग,रसिया होली में से हुआ। इसके बाद मधु श्रीवास्तव ने गोरी तोरे गालों पे लाल लाल ललिता गाकर माहौल को होलिमय बना दिया। भूषण अग्रवाल एवं मीनाक्षी अग्रवाल द्वारा होली के त्यौहार पर पति पत्नी के नोकझोंक एवं स्नेह को संगीत नृत्य के माध्यम से दर्शाया। आर्या मणि त्रिपाठी द्वारा एक के बाद कई होली पर देव गीत सुनाया। वहीं धुन बंजारा की अध्यक्ष मंजू श्रीवास्तव द्वारा मोरी चुनरी अजब गुलनारी जरी की किनारी न मारो श्याम पिचकारी। इसके अतिरिक्त अंजली सिंह ने लक्षिका प्रस्तुति,रीता श्रीवास्तवा द्वारा बसंत गीत, इंदू रायजादा ने मथुरा की होली ,प्रीति परिहार, अंबुज अग्रवाल ,सौरभ कमल, दीप्ती सक्सेना, रिया सिंह, स्नेहा रस्तोगी, दीप्ती सिंह, इत्यादि की मोहक प्रस्तुतियां हुईं। कार्यक्रम मंच संचालन यूपिका तिवारी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्था से अमित श्रीवास्तव, रोहित सिंह, अरुन मिश्रा, राजेश श्री. सौरभ कमल, विनय श्री. मौजूद रहे। धुन बंजारा की अध्यक्ष मन्जू श्रीवास्तवा ने बताया संस्था का उद्देश्य अपनी सनातन संस्कृति, तीर्थ यात्रा, तीर्थ स्थल पर भजन संध्या ,सामाजिक सेवा में एसिड अटैक पीड़ितों के सहायतार्थ कार्यक्रम करना इत्यादि है।

बच्चों को स्वाभिमान के साथ मिले अच्छी शिक्षा, राम लक्ष्मण जानकी संस्था दृढ़ संकल्पित पुरुषोत्तम

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। विकास क्षेत्र के चंदापुर स्थित प्राथमिक विद्यालय पुरानी बाजार को राम लक्ष्मण जानकी जी विराजमान संस्था रायबरेली के द्वारा डेस्क व बेंच भेंट की गई। ग्रामीणों व विद्यालय परिवार ने संस्था के अध्यक्ष पुरुषोत्तम गुप्ता के इस सराहनीय कार्य पर बधाई देते हुए आभार व्यक्त किया। राम लक्ष्मण जानकी जी विराजमान बासन टोला रायबरेली संगठन के अध्यक्ष पुरुषोत्तम गुप्ता ने कहा कि हमारे नौनिहाल देश का भविष्य हैं और बच्चों को स्वाभिमान के साथ अच्छी शिक्षा प्राप्त हो इसके लिए हमारी संस्था दृढ़ संकल्पित है और आगे भी सामाजिक कार्यों में हर संभव सहयोग करती रहेगी। खंड शिक्षा अधिकारी राम मिलन यादव ने प्रभारी प्रधानाध्यापक आलोक सिंह के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि सभी को प्रेरणा लेते हुए शिक्षण कार्य में सहयोग करना चाहिए जिससे राष्ट्र का विकास हो सके। चंदापुर रियासत के राजा उपेंद्र सिंह ने कहा कि यह सामुदायिक सहभागिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक आलोक सिंह संस्था का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि डेस्क बेंच मिलने से बच्चों का मन प्रफुल्लित है और बच्चे मन लगाकर पढ़ाई कर सकेंगे। एआरपी मनीष कुमार सिंह, शिक्षक अंकित कुमार, रिजवान अहमद,प्रभात कुमार सिंह,आशीष प्रताप सिंह, राधा रानी,ज्योति वर्मा,दीप्ती सिंह, कुलदीप वर्मा व अशोक कुमार समेत अन्य ग्रामीणों ने भी संस्था को बधाई दी है।

एक दिवसीय जय गुरुदेव सत्संग महोत्सव का आयोजन सम्पन्न

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। क्षेत्र के हसनगंज मजरे ओया गांव में रविवार को एक दिवसीय जय गुरुदेव सत्संग महोत्सव का आयोजन किया गया। जय गुरुदेव सत्संग से पहले जय गुरुदेव प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। समापन पर आयोजक राजाराम यादव द्वारा आयोजित विशाल भंडारे में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। जय गुरुदेव प्रार्थना कराते हुए संस्थान से आये गंगादीन यादव ने सत्संग कार्यक्रम का शुभारंभ किया। एक दिवसीय सत्संग में श्री यादव ने सत्संग प्रेमियों को बताया कि प्रभु की भक्ति में लीन रहकर अपना जीवन सफल बनाएं। उन्होंने शाकाहारी और नशामुक्त होने का भी संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जय गुरुदेव नाम का जहाज इस धरती पर लगा दिया गया है जो लोग इस जहाज पर चढ़ जाएंगे जन्म-मरण की पीड़ा से छुटकारा पा जाएंगे। सत्संग से ही प्रभू की भक्ति व आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का ज्ञान मिलता है। इस मौके पर राजाराम यादव, विजय राज सिंह, गया प्रसाद,बद्रीप्रसाद, सत्यनारायण साहू, राकेश यादव, पूर्व प्रधान पहरेमऊ अशोक कुमार, अधिवक्ता अशोक यादव, डॉ सुरेश यादव, अशोक निर्मल सहित अन्य लोग भी मौजूद रहे।

उर्स-ए ख्वाजा मोहम्मद हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह का 31 वाँ सालाना उर्स का समापन किया गया

संवाददाता, बरखेडा। कस्बे मे हजरत ख्वाजा मोहम्मद हसन शाह रहमतुल्लाह अलैह भैसोड़ी शरीफ जिला रामपुर का 31 वाँ सालाना तीन दिवसीय उर्स-ए पाक का समापन किया वही दौलतपुर रोड पर स्थित खानकाह हसनी मकसूदी जहांगीरी पर समापन किया गया। पहले रोज सुबह में कुरान ख्वानी और शाम में महफिले मिलादुन्नाबी दूसरे रोज सुबह में कुरान ख्वानी शाम में हल्काए जिक्र व महफिले सिमा बजमे क़व्वालियों के कार्यक्रम का आयोजन हुआ तीसरे रोज सुबह में कुरान ख्वानी दोपहर में कुल शरीफजिसमें नात मनक़वत, फातिहा ख्वानी, सिजरा ख्वानी, दुआ हुई इसके बाद लंगर तक़सीम के साथ उर्स-ए पाक का समापन हुआ वही सज्जादानशीन हजरत ख्वाजा सूफी शाकिर मियां शाह साहब किबला ने खासतौर से मुल्क की तरक्की व चौन आमन की दुआ की सैकड़ो जायरीनो ने बढ चढकर ने शिरक़त की इस मौके पर हाजी जमील अहमद, यासीन कुरैशी, मकसूद आदि हजारो की संख्या मे जायरीन मौजूद रहे।

शिव मंदिर की हुई स्थापना

संवाददाता, घुंघचाई। वृंदावन से शिव पार्वती परिवार की मूर्तियां वैदिक विधि विधान से मंदिर में स्थापित की गई। तीन दिन से चल रहे कार्यक्रम ने बढ़ चढ़कर लोगों ने भागीदारी निभाई। पहले दिन गोमती से पवित्र जल लाकर गांव के देव मंदिरों में चढ़ाया गया। कार्यक्रम को लेकर के लोगों में काफी उत्साह देखा जा रहा है। घुंघचाई गांव में नवनिर्मित शिव मंदिर मैं शिव पार्वती परिवार की मूर्तियां वृंदावन से लाई गई थी। वैदिक विधि विधान से यज्ञ आचार्य पंडित चंद्रभूषण शास्त्री ने तीन दिन से चल रहे कार्यक्रम में पहले दिन मंडनपुर के जंगल की स्थिति बाबा इकोत्तरनाथ मंदिर में पहुंचकर देव प्रतिमाओं का मिलाप कराया गया। और यहीं से कलश यात्रा निकली जो जल लेकर गांव के प्रमुख मंदिरों में उसे चढ़ाया गया। इस दौरान देवी देवताओं के उद्घोष से वातावरण एक और जहां और भव्य हो गया । तो यज्ञ में आहुति दिलवाकर मुख्य यजमान अश्विनी अवस्थी साधना अवस्थी ने यज्ञ में गांव के मंगल कामना को लेकर के आहुतियों दी। मंगलवार को विशाल भंडारे का भव्य आयोजन किया जाएगा।

कम नहीं हो रही है पूरनपुर कोतवाल की मुश्किले

संवाददाता, पीलीभीत। अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने थाना गजरौला के पूर्व इस्पेक्टर आशुतोष रघुवंशी द्वारा सार्वजनिक रूप से पुलिस की वर्दी के ऊपर भारतीय जनता पार्टी के कमल का निशान का गवाचा टांग कर फेटो खिंचवाने और इसे सोशल मीडिया पर प्रदर्शित किए जाने के मामले में कार्यवाही की मांग की है।पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने कहा है कि एक लंबे समय तक पुलिस विभाग में रहे हैं। और उन्होंने आज तक ऐसा होता नहीं देखा है। जब एक थाना प्रभारी किसी राजनीतिक दल का सिंबल इस प्रकार सार्वजनिक रूप से प्रसारित कर रहा हूं।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 27 जोड़ो का विवाह सम्पन्न

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। विकासखंड परिसर में सोमवार को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 27 जोड़ो का विवाह संपन्न हुआ। जिसमें वर वधू ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लिए। इस मौके पर वर वधू के परिजनों व अतिथियों ने नवदंपत्तियों को आशीर्वाद व उपहार भेंट किया। ब्लाक परिसर में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में क्षेत्र के 27 जोड़े हिंदू रीति रिवाज के अनुसार मंत्रोचार के बीच फेरे, सिंदूरदान व वरमाला पहनाकर एक दूसरे के जीवन साथी बने।विवाह समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे भाजपा नेता दिनेश सिंह राठौर व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि सत्येंद्र प्रताप सिंह ने बीडीओ शिव बहादुर सिंह व प्रधान संघ अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह दद्दू के साथ नवदंपत्तियों को आशीर्वाद दिया। इस दौरान बीजेपी नेता श्री सिंह ने कहा कि बेटी की शादी के लिए परेशान निर्धन व असहाय माता पिता के दर्द को समझते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ऐसे गरीब परिवार के बेटियों की शादि की जिम्मेदारी ली है।गरीब की बेटियों के लिए मुख्यमंत्री जी ने उपहार देने के साथ ही खाते में धनराशि भेजने की भी व्यवस्था की है। बीडीओ शिव बहादुर सिंह ने बताया कि क्षेत्र के 27 हिंदू जोड़ों का विवाह हिंदू रीति रिवाज के अनुसार विधि विधान से संपन्न कराया गया। शासन की ओर से प्रदत्त उपहार भेंट करने के साथ ही 35 हजार रुपए की धनराशि नवदंपत्तियों के खाते में भेजी जाएगी। इस अवसर एडीओ एसके नितिन श्रीवास्तव, धनेंद्र सिंह,शिखर शुक्ला, एपीओ राजीव त्यागी, प्रधान उमेश कुमार, सुनीता साहू, रमेश कुमार, सुनील मौर्या सहित पंचायत मंत्री व अन्य लोग मौजूद रहे।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने किया जिला कारागार का औचक निरीक्षण

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। जिलाधिकारी श्री अविनाश सिंह एवं पुलिस अधीक्षक, श्री अजीत कुमार सिन्हा द्वारा जिला कारागार, अम्बेडकरनगर का पुलिस बल के साथ मासिक औचक निरीक्षण किया गया। बंदियों से खानपान, बिस्तर, चिकित्सा व्यवस्था, मुलाकात, पी.सी.ओ. से वार्ता की जानकारी ली गई। कारागार की साफ सफाई पर संतोष जताया गया तत्पश्चात् अस्पताल का निरीक्षण किया गया। वहां भर्ती बंदियों का हाल पूछा गया। जहां किसी प्रकार की कोई भी शिकायत नहीं मिली। कारागार परिसर की सुरक्षा व्यवस्था व साफ-सफाई को देखकर जिलाधिकारी महोदय ने कारागार प्रशासन की प्रशंसा की तथा बंदियों को रचनात्मक कार्यों के कार्यान्वयन में आने वाली अड़चनों को दूर करने हेतु भी अपना सहयोग प्रदान करने हेतु आवश्वस्त किया। निरीक्षण के समय जेल अधीक्षक ध् अपर जिलाधिकारी डॉ0 सदानन्द गुप्ता, कारापाल श्री गिरिजा शंकर यादव चिकित्साधिकारी डॉ0 पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह डिप्टी जेलर श्री छोटेलाल सरोज, श्री अबसार अहमद व श्री नंद किशोर, फार्मासिस्ट श्री अशोक कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ सहायक, श्री रघुनाथ प्रसाद यादव व श्री अनूप कुमार गोंड समेत समस्त स्टाफ उपस्थित थे।

खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी की अवधि बढ़ाए जाने से दुकानदारों में खुशी की लहर

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा मुख्य विकास अधिकारी आवास के सामने लगाए गए खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी की अवधि बढ़ाए जाने से उद्यमियों को संजीवनी रूपी व्यवस्था मिली है, उद्यमियों से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि हम सभी जिलाधिकारी महोदय व जिला प्रशासन तथा खादी ग्रामोद्योग अधिकारी को धन्यवाद देना चाहते हैं कि दूरदराज से चलकर आए हम लोगों द्वारा जनपद मुख्यालय पर प्रदर्शनी लगाया गया है अगर जिला अधिकारी महोदय द्वारा समयाअवधि ना बढ़ाया जाता तो हम लोगों का किराया भी निकल पाना मुश्किल था, वही जैसे-जैसे मेले का समय व प्रचार प्रसार अधिक हो रहा है जनपद के साथ-साथ गैर जनपद के लोग भी मेले में आकर उद्यमियों द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी मेले का आनंद लेते हुए घरेलू उपयोग की वस्तुओं का खूब खरीदारी कर रहे हैं। हस्तनिर्मित माटी कला द्वारा निर्मित खादी के कपड़े महिलाओं से सम्बंधित आर्टिफिशियल गहने, सौंदर्य प्रसाधन, आयुर्वेदिक दवाइयां, किचनवेयर आइटम, आंवला प्रोडक्ट, बनारसी साड़ियां, कॉटन सिल्क साड़ियां, महिलाओं के लिए राजस्थानी चुनरी, सैंडल, लकड़ी द्वारा निर्मित घरेलू सामान मेले की प्रदर्शनी के प्रमुख आकर्षण अंग है। प्रदर्शनी मेला 4 मार्च तक आयोजित होगा।मेले में आए उद्यमियों का हौसला बढ़ाएं दैनिक घरेलू उपयोगी सामान को साथ ले जाएं।

टड़वा पहाड़पुर में निर्माणाधीन अमृत सरोवर निर्माण में घटिया सामग्री का प्रयोग

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। पेयजल संकट से निपटने व भूमि जलस्तर को बनाये रखने के लिए,गांव में जल संचय करने के लिए भारी भरकम बजट से ग्राम पंचायतों में अमृत सरोवर का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है। परन्तु ब्लाक अधिकारी की उदासीनता से सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं में सुमार अमृत सरोवर भी भ्रष्टाचार का भेंट चढ़ रहा है। अकबरपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत पहाड़पुर टंडवा में निर्माणाधीन अमृत सरोवर के घाट पर सीढ़ियों का निर्माण कराया जा रहा है। इसमें सरकारी मानक के विपरीत भस्सी व घटिया किस्म की सीमेंट मानक के अनुसार अनुपात में नही मिलाया जा रहा है और उसी से बोल्डर की चुनाई की जा रही है। वही निर्माण कार्य में पुराने ईट सहित अन्य घटिया निर्माण सामग्रियों का प्रयोग किया जा रहा है। जबकि ग्राम पंचायतों में किसी भी पक्का निर्माण कार्य में सरकारी मानक के अनुसार बालू का प्रयोग करना निर्धारित किया है। ए डीओ प्रभात सिंह ने बताया कि निर्माण कार्य के इस्टीमेट का अवलोकन करने बाद पता चलेगा कि बालू से निर्माण करना है या भस्सी से। यदि इस्टीमेट के विपरीत कार्य हुआ तो कार्रवाई की जाएगी।

एनटीपीसी-टांडा द्वारा दिव्यांग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों को सहायता

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। एनटीपीसी टांडा थर्मल पावर स्टेशन में नैगमिक सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत विवेकानन्द शिशुकुन्ज सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, विद्युतनगर में अध्ययनरत 05 दिव्यांग तथा 10 अनुसूचित जातिध्जनजाति के गरीब एवं मेधावी विद्यार्थियों के शिक्षा सत्र 2022-23 में हुए व्यय रूपये 2,55,173ध्- (दो लाख पचपन हजार एक सौ तिहत्तर रूपये) का चेक परियोजना प्रमुख बी.सी.पलेई ने विद्यालय के प्राचार्य काली प्रसाद मिश्र को प्रदान किया। विद्यालय में आगमन पर परियोजना प्रमुख पलेई एंव महाप्रबन्धक (मानव संसाधन) एस0 एन0 पाणिग्राही का स्वागत प्रधानाचार्य मिश्र द्वारा किया गया।इस अवसर पर उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए परियोजना प्रमुख पलेई ने कहा कि विद्यार्थियों को अपने कैरियर के निर्माण के लिए पूरे मनोयोग से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अब भी हमारे देश के कुछ क्षेत्रों में साक्षरता दर कम है, हमें साक्षरता दर के साथ ही शिक्षा के स्तर में और सुधार किए जाने की जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने सी एस आर के तहत आसपास के विद्यालयों एवं ग्रामीणजनों के विकास के लिए किए जा रहे रचनात्मक कार्यों की भी चर्चा की। कार्यक्रम में महाप्रबन्धक (मानव संसाधन) पाणिग्राही ने कहा कि दिव्यांग श्रेणी के विद्यार्थियों को 2010 से तथा अनुसूचित जातिध्जनजाति के गरीब एवं मेधावी विद्यार्थियों को 2015 से निःशुल्क शिक्षा प्रदान किए जाने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सी एस आर के तहत अध्ययनरत ये सभी बच्चे अच्छी शिक्षा ग्रहण करके स्वावलंबी बनकर समाज एवं विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकेंगे। इस अवसर पर परियोजना की उप महाप्रबन्धक (मा0संसा0) श्रीमती मृणालिनी, अनुसूचित जातिध्जनजाति एसोशिएसन के अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एवं मंत्री तथा सीएसआर अधिकारी एन.ए.शिपो के साथ-साथ विद्यालय प्रबंधन के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में प्रधानाचार्य श्री मिश्र ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किया।

आईजी ने की समीक्षा बैठक दिया आवश्यक निर्देश

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बस्ती। पुलिस महानिरीक्षक बस्ती परिक्षेत्र बस्ती आर0 के0 भारद्वाज द्वारा परिक्षेत्र के जनपद बस्ती के हर्रैया सर्किल के क्षेत्राधिकारी व थानों हर्रैया, छावनी, गौर, परसरामपुर व पैकोलिया के थाना प्रभारियों व कर्मचारीगण के साथ अर्दली रूम की गई। आई जी द्वारा अर्दली रूम ,अपराध रजिस्टर, लंबित विवेचना, प्रारंभिक जांच , जांच , जेड रजिस्टर आदि का गहनता से समीक्षा की गई जिसमें क्षेत्राधिकारी व थाना प्रभारियों को विवेचना निस्तारण के प्रतिशत को सुधारने के लिए निर्देशित किया गया चार्जशीट या फाइनल रिपोर्ट क्षेत्राधिकारी कार्यालय से ही एक कर्मचारी द्वारा न्यायालय में दाखिल किया जाएगा तथा इसका इंद्राज प्रत्येक दशा में जीडी में अंकित किया जाएगा तथा दाखिला होने या ना होने की स्थिति में तस्करा जीडी में अवश्य अंकित किया जाएगा एवं दाखिले के संबंध में होने वाली कठिनाइयों को पुलिस अधीक्षक के माध्यम से मॉनिटरिंग सेल की मीटिंग में रखी जाएगी स जीडी पर सीसीटीएनएस के माध्यम से आपत्ति नहीं किया जाता है महोदय द्वारा जिस पर ध्यान देने का निर्देश दिया गया स समीक्षा के दौरान आइजीआरएस की स्थिति काफी खराब मिली गुणात्मक सुधार हेतु निर्देशित किया गया व प्रारंभिक जांच व सामान्य जांच को अति शीघ्र निस्तारण करने हेतु क्षेत्राधिकारी हर्रैया को निर्देशित किया गया स पब्लिक अफरूवल सिस्टम(चै) में रेटिंग खराब होने पर सभी प्रभारी निरीक्षकध् थानाध्यक्ष को रेटिंग ठीक करने का महोदय ने निर्देश दिया साथ ही साथ विगत 3 माह में स्थिति में सुधार ना होने पर बड़ी कार्रवाई करने का दिया ।

स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। भारत में बौद्धिक संपदा अधिकार कानून और व्यवहार के उभरते हुए मुद्दे नामक शीर्षक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित हुई जिसमें प्राचार्य डॉ. आर के आजाद ने स्वागत भाषण पढ़ा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. महारुख मिर्जा ने कहा कि दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी समापन की ओर है, 2 दिन में 4 तकनीकी सत्र चलें इसमें प्रतिभागी स्वयं मंथन करें कि हम यहां से सीखकर समाज के लिए ऐसा क्या लाएं जो समाज की उन्नति रोजगार और शिक्षा को आगे बढ़ा सके। उन्होंने कहा कि आज परंपरागत शिक्षा की जगह वास्तविक शिक्षा की जरूरत है। अतिथि विशेष उच्च शिक्षा निदेशालय प्रयागराज के सहायक निदेशक प्रो. जय सिंह ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की सराहना करते हुए संगोष्ठी को शोधकर्ता, विद्यार्थियों और शिक्षक वर्ग के लिए अधिक लाभप्रद बताते हुए कहा कि इससे छात्र शोधार्थी, शिक्षक को स्वयं को विकसित करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता। उप प्राचार्य व वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डा. अनुराग अग्रवाल के कुशल संचालन में संपन्न हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी के प्रति आभार डा. देवेंद्र सिंह ने व्यक्त किया। संगोष्ठी में विशेष योगदान देने वाली साक्षी, सुमित, अंशिका, शिवानी, जतिन, प्रज्वल वरुण को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डा. पुनीत मनीषी, डा. धर्मवीर सिंह परमार, डा. पदमजा मिश्रा, डा. बरखा सक्सेना, डा. गौरव सक्सेना, डा.संतोष प्रताप सिंह, विजय तिवारी, सचिन खन्ना, अजय कुमार वर्मा, मिश्रा, रूपक श्रीवास्तव, यशपाल कश्यप देव सिंह कुशवाहा, प्राची मिश्रा, प्रसंशा सक्सेना, आँचल रस्तोगी, बादल सिंह, मो जैद, अरहम खान आदि उपस्थित रहे। संगोष्ठी के अंतिम दिन में दो तकनीकी सत्र चले तृतीय तकनीकी सत्र में डा. शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय लखनऊ के वाणिज्य संकाय के प्रो नरेंद्र यादव अध्यक्ष रहे। मुख्य अतिथि डीएन कालेज मेरठ के वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रोफेसर के एस.के शर्मा मुख्य वक्ता डॉ. जीएस ओझा ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के डॉ. मनीष कुमार सीए नीलेश शुक्ला, व डॉ. जगदीश कुमार रहे चौथे सत्र में बरेली विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय के डीन प्रो. पीवी सिंह कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। मुख्य अतिथि राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद के प्राचार्य प्रो. राजकुमार सिंह, राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद के प्रोफेसर एस के सिंह एमएम कॉलेज मोदी नगर के डॉ. वेदप्रकाश, राजकीय महाविद्यालय डॉ. आशीष दीक्षित, सन इंस्टिट्यूट के विकास अग्रवाल आदि रहे। दो दिन में 4 तकनीकी सत्रों में लगभग 52 शोध पत्र पढ़े गए। तृतीय तकनीकी सत्र से छात्र वर्ग से सत्यम शुक्ला एमए अर्थशास्त्र को बेस्ट पेपर का अवार्ड मिला जबकि चतुर्थ तकनीकी सत्र से छात्र वर्ग से समृद्धि सक्सेना और शिक्षक वर्ग से बृज लाली को बेस्ट रिसर्च पेपर का अवार्ड दिया गया।

उन्नाव में परीक्षा केंद्र पर एक भाई की जगह दूसरा भाई पेपर देते हुए पकड़ा गया तो हुई कार्यवाही

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव। बांगरमऊ के आरआरडीएस इंटर कॉलेज में बीते शनिवार को चित्रकला की परीक्षा में मूल परीक्षार्थी की जगह दूसरा व्यक्ति परीक्षा देते हुए पकड़ा गया था। पकड़े जाने के बाद नए केन्द्र व्यवस्थापक और अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापक की नवीन तैनाती गई है, जबकि केन्द्र पर लगे दो कक्ष निरीक्षकों को कार्यमुक्त कर दिया गया है। डीआईओएस ने कार्रवाई कर अन्य परीक्षा केंद्रों के व्यवस्थापकों को भी सख्ती बरतने की बात कही है। बीते शनिवार को सुबह पाली में हाईस्कूल के छात्रों की चित्रकला विषय की परीक्षा संचालित थी। इसमें मूल परीक्षार्थी मुकीम की जगह उसका बड़ा भाई शादाब परीक्षा देते हुए पकड़ा गया था। इस पर शादाब पर तत्काल एफआईआर कराकर मूल परीक्षार्थी को परीक्षा से रेस्टीकेट किया गया था। दूसरे दिन परीक्षा में शुचिता प्रभावित होने पर पूर्व में तैनात केन्द्र व्यवस्थापक आरआरडीएस प्रधानाचार्य वर्षा रानी को हटाकर राजकीय हाईस्कूल बेरियागढ़ा के सहायक अध्यापक गौरव दीक्षित और पूर्व में तैनात अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापक सुभाष इंटर कॉलेज बांगरमऊ के सहायक अध्यापक सत्येन्द्र कुमार को हटाकर इसी विद्यालय के सहायक अध्यापक प्रमोद कुमार मौर्य को नवीन तैनाती दी गई है।

खतरनाक मोड़ वाहरपुर अहनैया नदी में गिरी दौड़ती लग्जरी कार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

भरथना,इटावा। भरथना कोतवाली क्षेत्र अन्तर्गत इटावा कन्नौज हाईवे स्थित ग्राम वाहरपुर के निकट गुजरी अहनैया नदी का पुल और खतरनाक मोड़ पर लगातार हो रहीं दुर्घटनाओं के चलते अब यह स्थान दुर्घटना पॉइंट बन गया है। आपको बतादें बीती रविवार की रात्रि करीब 9 बजे इसी हाईवे पर इटावा से भरथना होते हुए कन्नौज की तरफ तेज रफ्तार दौड़ी जा रही एक लग्जरी कार खतरनाक मोड़ पर अनियंत्रित होकर अहनैया नदी में जा गिरी। हालांकि उक्त लग्जरी कार के खतरनाक मोड़ पर अहनैया नदी में गिरता देख,आस पास खेतों की रखवाली कर रहे कृषकों व कुछ राहगीरों ने किसी तरह दौड़कर नदी में डूबती कार में फसे घायल चालक को शीशी तोड़कर कार से बाहर निकाला और उसे चिकित्सालय पहुचाकर चालक की जान बचाई। घायल चालक गुफरान पुत्र एजाज खां ने बताया की वह भरथना की तरफसे कन्नौज जा रहा था।अचानक अहनैया नदी का खतरनाक मोड़ आने पर उसकी कार अनियंत्रित होकर गहरी नदी में जा गिरी जिसमें वह घायल होकर बुरी तरह फस गया, हालांकि कुछ मददगीरो ने किसी तरह नदी में घुसकर उसकी जान बचाई है।आपको बताते चलें यूं तो उक्त वहारपुर अहनैया नदी के खतरनाक मोड़ आए दिन छोटे बड़े वाहन दुर्घटना ग्रस्त होकर कभी नदी तो कभी खाई में गिरते रहे हैं, लेकिन अभी बीते सप्ताह नन्हें मुन्ने छात्र छात्राओं से भरी एक स्कूल वैन दुर्घटना ग्रस्त होकर बीस फीट गहरी खाई में जा गिरी तब जिला प्रशासन तक हिल गया था। उसके ठीक एक दिन छोड़ कर उसी घटना स्थल पर एक लग्जरी कार जा गिरी थी। बाबजूद इसके उक्त घटना स्थल खतरनाक मोड़ पर लगातार दौड़ते वाहन अनियंत्रित होकर दुर्घटना ग्रस्त हो नदी व बगल की गहरी खाई में जा गिरती हैं। उक्त कार के नदी में गिरते ही सुरेश दोहरे,राघवेंद्र तिवारी, प्रदीप तिवारी आदि ग्रामीणों ने कार में फसे घायल चालक को निकलकर उसकी जान बचाई है।

सांसद का तीन दिवसीय दौरा ,विभिन्न कार्यक्रमों में होंगी शामिल

28 फरवरी व 1 मार्च को शास्त्रीनगर आवास पर होगी जनसुनवाई

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद मेनका संजय गांधी तीन दिवसीय दौरे पर आज सोमवार को संसदीय क्षेत्र पहुंची । दिल्ली से सड़क मार्ग द्वारा नोएडा, यमुना -आगरा - लखनऊ एक्सप्रेस-वें से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे होते हुए शाम 4रू30 बजे संसदीय क्षेत्र के कूरेभार पहुंची ।वहां से सीधे दोस्तपुर विकास खण्ड अन्तर्गत कैथा गोसरपुर - भीखीपुर में प्रबुद्धजन सम्मेलन में व विरैतापालीपुर गांव गयी ।इसके बाद शास्त्रीनगर स्थित संदीप प्रताप सिंह के आवास पर कार्यकर्ताओं से भेंट मुलाकात करने के बाद रात्रि विश्राम करेंगी ।सांसद मीडिया प्रभारी विजय सिंह रघुवंशी ने जानकारी देते हुए बताया की मंगलवार को प्रात:10रू30 बजे जिला पंचायत सभागार में केन्द्रीय बजट व अन्य विषयों पर पत्रकार वार्ता करेगी ।इसके बाद लंभुआ विधानसभा में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों मे शामिल होगी। 1 मार्च को विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद 2रू30 बजे सड़क मार्ग द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगीद्य 28 फरवरी व 1 मार्च को प्रात: 7रू00 बजे से 9रू00 बजे तक जनता दर्शन कार्यक्रम के माध्यम से जन-शिकायतों का निस्तारण करेंगी।

भाजपा ने 1221 बूथो पर सुनी पीएम मोदी की मन की बात

○ बूथों पर बूथ समिति की बैठक कर आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मन की बात का 98 वां एपिसोड जिले के 1221बूथों पर पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा सुना गया ।मन की बात सुनने के बाद बूथ समिति की बैठक कर पीएम किसान सम्मान निधि,बूथ सशक्तिकरण और केन्द्र व प्रदेश सरकार के बजट पर चर्चा की गयी ।इस दौरान आगामी कार्यक्रम की योजना को अन्तिम रूप दिया गया ।प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ.आरए वर्मा ने बूथ संख्या 300 गुरुनानक विद्यालय में सहकारी बैंक अध्यक्ष विजय मिश्रा,आत्मजीत सिंह टीटू व सतनाम सिंह आदि की उपस्थिति में सुना ।जिलाध्यक्ष ने कहा प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम को जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफॉर्म बना दिया है ।वही कार्यक्रम संयोजक ज्ञान प्रकाश जायसवाल ने बूथ संख्या 274 पुरानी बाजार, निवर्तमान जिलाध्यक्ष जगजीत सिंह छंगू व भाजपा प्रवक्ता विजय सिंह रघुवंशी ने नगर के सीताकुण्ड शक्तिकेंद्र के बूथ संख्या 197 पर बूथ अध्यक्ष विजय विक्रम सिंह, शक्तिकेंद्र संयोजक अमित श्रीवास्तव, अरूण तिवारी,अजय सिंह, प्रदीप मिश्र व धर्मेंद्र द्विवेदी आदि के साथ सुना ।जिला महामंत्री घनश्याम चौहान ने बूथ संख्या 106 जवाहरनगर, कादीपुर में , संजय सिंह त्रिलोकचन्दी ने बूथ संख्या 293 लंगड़ी, संदीप सिंह बूथ संख्या 243 विवेकनगर,सुनील वर्मा बूथ सख्या 319, ब्लाक प्रमुख भदैया राजेंद्र वर्मा ने ज्ञानीपुर में,धर्मेन्द्र कुमार बूथ संख्या 292 राइननगर पर बूथ अध्यक्ष व बूथ समिति के साथ मन की बात कार्यक्रम सुना ।वही पूर्व जिलाध्यक्ष करूणा शंकर द्विवेदी, गिरीश नारायण सिंह, डॉ सीताशरण त्रिपाठी,अर्जुन सिंह, ऋषिकेश ओझा, आनन्द प्रकाश द्विवेदी,कृपाशंकर मिश्रा,विजय त्रिपाठी, आलोक आर्या, आशीष सिंह रानू, राजेश सिंह,प्रदीप शुक्ल, विवेक सिंह विपिन, मनोज मौर्या, राजित राम, जिला सह मीडिया प्रभारी अशोक सिंह, एलके दूबे तातो मूरैनी सेक्टर,आकाश जायसवाल,मनोज श्रीवास्तव,राम अभिलाष सिंह,सुभाष वर्मा,संदीप तिवारी, संदीप पाण्डे शहीद जिला पदाधिकारी एवं मंडल अध्यक्ष व वरिष्ठ नेताओं व जनप्रतिनिधियों आदि ने अपने-अपने बूथों पर मन की बात कार्यक्रम सुना।

मां परखेगी मिड-डे मील की गुणवत्ता

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

ऊसराहार,ताखा,इटावा। बेसिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों में मिड डे मील की गुणवत्ता को परखने के लिए मां समूह का गठन किया गया ।मां समूह को विद्यालय के प्रधानाध्यापकों द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रत्येक दिन मां समूह की एक अभिभावक महिला विद्यालय में आकर मिड मील की गुणवत्ता परखेगी। ताखा क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों में बीईओ वीरेंद्र सिंह पटेल के निर्देशन में मां समूह को प्रशिक्षित किया जा रहा है। कंपोजिट विद्यालय दीग में दिनेश चौधरी,कंपोजिट विद्यालय बकौली में अवधेश सिंह राठौर, उच्च प्राथमिक विद्यालय अमथरी में विकास यादव,प्राथमिक विद्यालय नगला महासिंह में अवधेश पाल,प्राथमिक विद्यालय भीखमपुर में सुधीर शरण के द्वारा मां समूह को प्रशिक्षित किया गया। अवधेश सिंह राठौर ने बकौली में मां समूह को प्रशिक्षित करते हुए कहा कि मिड डे मील में मां समूह की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। प्रत्येक सदस्य को रोस्टर से विद्यालय आकर मिड मील की गुणवत्ता को परखना है ताकि आपके बच्चों को गुणवत्तायुक्त भोजन मिले। इस प्रशिक्षण में समूह की महिलाओं को उनके कर्तव्यों का बोध कराया गया। मिड डे मील मेन्यू पर भी विस्तार से चर्चा की गई। इस मौके पर ओमप्रकाश,गीता दोहरे,प्रदीप पाल,प्रदीप चौहान,सचेंद्र कुमार,हरेंद्र कुमार,राजेंद्र राठौर,ब्रजेश गुप्ता समेत कई शिक्षक मौजूद रहे।

दो मित्रों ने साथी पर किया चाकू से जानलेवा हमला

संवाददाता, इकदिल,इटावा। इकदिल थाना क्षेत्र के गांव केशोपुर जादवपुर में जान से मारने की नियत से हमला करने का मामला आया सामने। आकाश पुत्र मुनेश चंद ने अपने रिस्तेदार समेत दो लोगों के खिलाफथाने में प्रार्थना पत्र देते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। उसने बताया कि हनी पुत्र सोनू निवासी मोहल्ला गुलियांत थाना इकदिल का रहने वाला है। हाल पता एकता कॉलोनी रोहतक हरियाणा में रह कर पढ़ता है वह अपने मित्रों प्रशांत पुत्र बलवान निवासी मोहल्ला विजय नगर थाना शिवाजी कॉलोनी,प्रवीन जाट पुत्र धर्मेंद्र निवासी रेलवे कॉलोनी रोहतक हरियाणा के साथ हमारे घर 26 फरवरी को दोपहर घूमने की बात कहकर आये थे तब देर रात को घर पर खाना खाकर हनी व उसके दोनों मित्र मकान के पहली मंजिल पर सो गए। हम अपनी पत्नी व बच्चों सहित नीचे सो रहे थे। तभी सोमवार सुबह लगभग 4 बजे छत पर चीख पुकार की आवाज सुनकर आकाश अपनी पत्नी सहित छत पर जाकर देखा तो हनी व प्रशांत अपने दोस्त प्रवीन के ऊपर चाकू व केची से जान से मारने की नियत से वार कर रहे थे।

खीरों क्षेत्र से दारोगा भर्ती में आठ अभ्यर्थियों का चयन, क्षेत्र में हर्ष

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

खीरों, रायबरेली। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में सब इंस्पेक्टर के पद के लिए चयनित उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र वितरित किए। खीरों क्षेत्र में भी सात चयनित उम्मीदवारों को नियक्ति पत्र प्रदान किए गए। आयोजित कार्यक्रम के दौरान खीरों क्षेत्र के भाजपा मण्डल अध्यक्ष शिवराम सिंह के भतीजे अभिनव पुत्र बलराम सिंह निवासी हथिगवां भीतरगांव ब्लॉक खीरों,आलोक कुमार पुत्र सन्त लाल यादव निवासी ग्राम शिवपुरी खीरों, उदय प्रताप सिंह पुत्र जगतपाल सिंह निवासी ग्राम बरहा खीरों,अनूप कुमार मिश्रा निवासी ग्राम निहस्था खीरों,आशीष कुमार पुत्र श्री प्रकाश निवासी ग्राम टिकवामऊ खीरों,कुमकुम पुत्री महावीर निवासी ग्राम दुकनहा खीरों, विकाश सिंह पुत्र सत्येन्द्र बहादुर सिंह निवासी ग्राम टिकवामऊ खीरों,आशीष कुमार पुत्र राम बिहारी निवासी ग्राम दृगपालगंज खीरों को न्युक्ति पत्र दिया गया। न्युक्ति पत्र लेने के बाद खीरों क्षेत्र के युवाओं ने दरोगा भर्ती में चयन पाने के बाद खुशी जाहिर करते हुए कहा कि लक्ष्य के प्रति लगातार अग्रसर रहने से एक दिन सफलता अवश्य मिलती है। वही खीरों क्षेत्र के सभी चयनित युवाओ के परिवारीजानो में खुशी की लहर दौड गयीं।

स्वैच्छिक रक्तदान को लगेंगे विशेष शिविर-डॉ नीतू द्विवेदी

तीन दिवसीय रक्तदान शिविर में 33 जवानों ने किया रक्तदान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। रक्तदान महादान है,इससे किसी का जीवन बचाया जा सकता है, इसलिए सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए कोई भी व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से कभी भी रक्तदान कर सकता है। ब्लड बैंक के तत्वावधान में सोमवार को लगाए गए रक्तदान शिविर में प्रांतीय सशस्त्र बल (पीएससी) कैंपस में चार जवानों द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान किया गया। पीएससी कमांडेंट अनिल कुमार सिंह बताया कि एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में लगभग 5.5 लीटर खून होता है यदि उसमें से 300 एम एल खून दान कर दिया जाए तो उससे शरीर को कोई भी नुकसान नहीं होता,रक्तदान के बाद शरीर की अस्थि मज्जा कोशिकाएं तीव्र गति से सक्रिय हो जाती हैं और खून तेजी से बनने लगता है। इसलिए रक्तदान करने से शरीर को लाभ ही होता है। रक्तदान करने वाले 27 वर्षीय राजेश सिंह ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से रक्तदान कर रहा हूं और मुझे कभी भी रक्तदान करने के बाद कोई कमजोरी या शारीरिक परेशानी नहीं हुई। इसी लिए अपने साथियों से भी अपील करता हूं कि अवसर मिलने पर रक्तदान अवश्य करें। रक्तदान शिविर में डॉ अरुण ब्लड बैंक कर्मचारी रजनी,शैलेंद्र,अर्जुन उपस्थित रहे। रक्त केंद्र प्रभारी डॉ नीतू द्विवेदी ने बताया कि प्रदेश में स्वैच्छिक रक्तदान का प्रतिशत 48 प्रतिशत रह गया है,जबकि भारत सरकार द्वारा 60 प्रतिशत लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसलिए स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाकर निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए 24,25 व 26 तारीखों को जिलें में विशेष रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि 24 से 26 मार्च को भी जिले में विशेष स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाए जाएंगे यदि कोई भी संस्था स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाने के लिए इच्छुक है तो वह ब्लड बैंक से संपर्क कर सकती है,ब्लड बैंक द्वारा पूरा सहयोग प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि स्वैच्छिक रक्तदान शिविर के तीन दिवसीय आयोजन के तहत 24,25 और 26 फरवरी को एक्सिस बैंक द्वारा आठ यूनिट ब्लड व मदर डेयरी के कर्मियों द्वारा 21यूनिट ब्लड दान किया गया। डॉ.नीतू ने बताया कि रक्तदान करने के लिए सामान्यतया एक व्यक्ति 18 वर्ष की उम्र से 60 वर्ष की उम्र के बीच तीन माह में एक बार रक्तदान कर सकता है। उन्होंने बताया कि रक्तदान करने से शरीर को कई लाभ होते हैं। जिसमें तीन महीने में एक बार रक्तदान कर सकते हैं। इससे खून में आयरन की मात्रा ठीक बनी रहती है और दिल की बीमारियां भी दूर रहती हैं। रक्तदान से स्ट्रोक व हार्ट अटैक से भी बचाव होता है। रक्तदान से वजन घटाने में भी मदद मिलती है। एक बार ब्लड डोनेट करके 650-700 कैलरी घटा सकते हैं। कैलरी घटने से वजन भी कम होता है। ब्लड डोनेशन से मानसिक संतुष्टि भी मिलती है क्योंकि आपके द्वारा डोनेट किए गए ब्लड व प्लेटलेट से कई लोगों को नया जीवन दान मिलता है जिससे खुशी और मानसिक संतुष्टि का अहसास होता है। ब्लड डोनेशन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी होती है,जिसकी वजह से हमारा शरीर कई तरह की बीमारियों से लड़ने में सक्षम बनता है।

सीएम की सुरक्षा में तैनात कांस्टेबल का हुआ अंतिम संस्कार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अयोध्या। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा में तैनात एक कांस्टेबल संदीप यादव की असलहा साफ करते हुए गोली निकली और जाकर सिर में लगी और मौत हो गई। सीएम की सुरक्षा में तैनात कांस्टेबल संदीप पुत्र वेद प्रकाश यादव मिल्कीपुर तहसील के थाना कोतवाली इनायत नगर क्षेत्र के कदनपुर गांव निवासी थे। मसौली थाना क्षेत्र के ग्रीनसिटी स्थित आवास में असलहा साफ कर रहे थे। उसी बीच असलहे से अचानक निकली गोली सिर में जा लगी। घटना की जानकारी होते ही मौके पर पहुंचे पुलिस अधिकारी उसे जिला अस्पताल लेकर भागे लेकिन डॉक्टरों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया। अधिकारियों ने घटना की जानकारी मृतक कांस्टेबल संदीप के परिजनों को दी। जानकारी होते ही परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस के जवानों ने मृतक कांस्टेबल संदीप का शव गांव लेकर जैसे पहुंचे ग्रामीणों में मातम सा छा गया। घर की मृतक जवान के घर की महिलाएं रोते-रोते बेहोश हो जा रही थी। पुलिस क्षेत्राधिकारी मिल्कीपुर आशुतोष मिश्रा, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली इनायतनगर अमरजीत सिंह पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर गार्ड ऑफ ऑनर के साथ पुलिस के जवानों ने अपने साथी को सलामी दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री कार्यालय से आए अधिकारियों, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि समेत हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे। मृतक कांस्टेबल संदीप यादव वर्ष 2011 में पुलिस में भर्ती हुए थे, पिछले पांच साल से मसौली थाना क्षेत्र के ग्रीन सिटी में रह रहा थे। शनिवार की सुबह उन्हें पुन: मुख्यमंत्री की सुरक्षा में जाना था। लेकिन उससे पहले ही उनकी मौत हो गई। मृतक संदीप चार भाइयों में दूसरे नंबर पर थे और अकेले सरकारी नौकरी कर रहे थे। इनकी पत्नी निशा पेशे से अधिवक्ता है इनको एक 9 साल की बेटी बिट्टू है। परिवार हंसी खुशी से चल रहा था लेकिन अब तो परिवार में मातम सा छाया हुआ है।

डीएम ने विकास कार्यों की चित्र प्रदर्शनी का फीता काटकर किया उद्घाटन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बस्ती । जिलाधिकारी श्रीमती प्रियंका निरंजन ने कलेक्ट्रेट में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, लखनऊ द्वारा आयोजित प्रदेश के विकास कार्यों की चित्र प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इन चित्रों के माध्यम से जनमानस को प्रदेश में संचालित विकास योजनाओं की एक स्थान पर जानकारी प्राप्त हो रही है। जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष राजेन्द्रनाथ तिवारी ने कहा है कि योजनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए विभाग का यह सराहनीय प्रयास है। दिशा समिति के सदस्य जगदीश शुक्ल ने कहा कि राज्य एवं केन्द्र सरकार की उपलब्धियं को इस प्रदर्शनी के माध्यम से आमजन तक आसानी से पहुँचाया गया है। इस अवसर पर जी-20, रोजगार के अवसर, महिलाओं को शिक्षा सुरक्षा एवं सम्मान, उत्तर प्रदेश डिफेंस कॉरिडोर, गरीब कल्याण को समर्पित बजट, सर्वाधिक मेडिकल कॉलेज वाला प्रदेश, गन्ना किसानों को 2 लाख करोड रुपए का भुगतान, स्टार्टअप इन यूपी, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, शौचालय निर्माण, स्थानीय उत्पाद एवं शिल्पकार को अंतर्राष्ट्रीय पहचान, ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत 1.38 लाख विद्यालयों का विकास, आईटीआई इलेक्ट्रॉनिक्स में अग्रणी राज्य, सर्वाधिक इंटरनेशनल एयरपोर्ट, विश्वकर्मा श्रम सम्मान, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि, एक्सप्रेस वे का विशाल नेटवर्क, मोक्षदायिनी काशी, भगवान बुद्ध की भूमि सारनाथ, ऐतिहासिक धरोहर, महायोगी गुरु गोरक्षनाथ की तपोभूमि गोरखपुर, आधुनिक एवं अलौकिक श्री राम नगरी अयोध्या, देश के सबसे बड़े फिल्म फ्रेंडली प्रदेश, रंगों से सजे उत्सव त्यौहार मथुरा की होली, दुधवा नेशनल पार्क, उज्जवला गैस योजना, मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आयुष्मान भारत, कोविड टीकाकरण, आरोग्य मेला आदि चित्रों को देखा एवं सराहना किया। इस अवसर पर पीडी कमलेश सोनी, उपजा के प्रदेश सचिव जयन्त कुमार मिश्रा, प्रेसक्लब अध्यक्ष विनोद कुमार उपाध्याय, पुनीत ओझा, जिला समन्वयक राजाशेर सिंह, सूर्यलाल, नाजिर मुज्तवा, जनप्रतिनिधि, पत्रकार एवं आमनागरिक गण उपस्थित रहें।

भारतीय चमार महासभा ने सीओ लंभुआ हेड पेशी के खिलाफ जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। भारतीय चमार महासभा के जिला अध्यक्ष अनिल कुमार गौतम ने चकरपुर मामले को लेते हुए अपने कार्यकर्ताओं के साथ जिलाधिकारी के गेट के सामने पहुंचकर नारेबाजी करते हुए जिलादिकारी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया है कि ममता पत्नी जितेंद्र कुमार जो चकरपुर की रहने वाली है,ने 18 दिसंबर 2022 को घनश्याम यादव के खिलाफ कई धाराओं में मुकदमा पंजीकृत करवाया था। जिसकी विवेचना कोतवाली लंभुआ से शुरू की गई ।उसके विपरीत सीओ लंभुआ हेड पेशी ओम प्रकाश यादव अपने जाति को लाभ पहुंचाने के लिए पीड़िता के ऊपर भी मुकदमा दर्ज करवा दिया ।उन्होंने फोन से धारा को निकालने के लिए पीड़ित के विपक्षी से बात किया, जिसका वीडियो वायरल हो गया ।इन सब घटनाओं से पीड़ित होकर महिला ने भारतीय चमार महासभा के कार्यालय में मिलकर अपनी बातों को बताया। उसके बाद जिला अध्यक्ष अनिल गौतम ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। जिलाधिकारी ने एसपी से बात करते हुए जांच करने का आदेश दिया है। उसके बाद उन्होंने कार्यकर्ताओं को एसपी से मिलने के लिए कहा। महासभा के कार्यकर्ताओं ने एसपी से मिलकर अपनी बातों को रखा। पुलिस अधीक्षक ने जांच का आदेश देते हुए विवेचना को थाना लम्भुआ से हटवा दिया तथा न्याय का भरोसा दिया।

मंदिर समिति की बैठक दूसरे दिन जारी,राम लला की प्रतिमा और मंदिर निर्माण को लेकर चर्चा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अयोध्या। श्री राम जन्मभूमि में विराजमान रामलला के निर्माणाधीन मंदिर और परिसर में चल रहे विकास योजनाओं को लेकर दूसरे दिन भी मंदिर निर्माण समिति की बैठक जारी है। पहले दिन शनिवार को निरीक्षण के बाद समीक्षा की गयी। आज राम लला की प्रतिमा और देव शिलाओं के लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया जा सकता है। समिति चेयरमैन व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पूर्व सलाहकार नृपेंद्र पहले दिन मंदिर निर्माण कार्य का अवलोकन किया। इस दौरान परिसर में बुनियादी ढांचे और विकास की योजनाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। जन्मभूमि परिसर में बने विश्वामित्र आश्रम स्थित एलएंडटी कार्यालय में प्रगति की समीक्षा लिया था। इसके अलावा गृह विभाग अधिकारियों ने उन्हें मानवरहित सुरक्षा जांच के उपकरणों के इंस्टॉलेशन और उनके कार्य के तरीके की जानकारी दी। बताया गया कि जन्मभूमि पथ पर 40 मीटर आगे रेडियो फ्री क्वेंसी आईडेंटिफिकेशन डोर (आरएफ आईडी) बेस्ड बूम बैरियर लगाए जाएंगे।

किसान संगोष्ठी और सहभोज कार्यक्रम का आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

गोण्डा। भाजपा किसान मोर्चा गोंडा के द्वारा श्री अन्न (मोटा अनाज) पर किसान संगोष्ठी एवं सहभोज का कार्यक्रम उद्यान विभाग परिसर में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष विद्या भूषण द्विवेदी ने की मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा किसान मोर्चा के क्षेत्रीय महामंत्री हरीश श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष अमर किशोर कश्यप,सूर्य नारायन तिवारी निवर्तमान जिलाध्यक्ष भाजपा, अकबाल बहादुर तिवारी, रमाकांत तिवारी पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ पं दीन दयाल उपाध्याय, और श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। मुख्य अतिथि ने किसानों को जैविक और गौ आधारित प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया और बिना कीटनाशक और रासायनिक खाद के मोटा अनाज उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि मोटे अनाज जैविक खेती से उत्पादित करने पर और भोजन में उनका उपयोग करने पर स्वत: ही तमाम तरह के रोग खत्म हो जाएंगे। विशिष्ट अतिथियों ने जैविक और प्राकृतिक खेती के लाभ बताए और मोटे अन्न उपजाने तथा गौ पालन करने पर जोर दिया ।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष विद्या भूषण द्विवेदी ने किसानों को जैविक और प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रशिक्षण दिलाने और सरकार द्वारा दी जा रही योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए भाजपा किसान मोर्चा के द्वारा सहयोग करने का आश्वासन दिया और कार्यक्रम का समापन किया ।जिला मीडिया प्रभारी शिवांशु मिश्र ने जानकारी देते हुए बताया कि पूरे जिले में ऐसे ही भाजपा किसान मोर्चा निरंतर संगोष्ठी और सहभोज के माध्यम से किसानों को जैविक और प्राकृतिक खेती करने के लिए जागरूक करेगी।

विश्वकर्मा समाज उत्थान समिति का सामूहिक विवाह संपन्न

संवाददाता

कानपुर। विश्वकर्मा समाज उत्थान समिति के तत्वाधान में विश्वकर्मा वंशीय दहेज रहित सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन माँ शारदा लॉन जरोली फेस में किया गया। समारोह का शुभारम्भ विनोद कुमार शर्मा एवं संजय विश्वकर्माने भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि मा0 त्रिपुणायक विश्वकर्मा ने भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर माल्या पण किया तथा वर-वधुओं को आशीर्वाद प्रदान किया। समाज के सभी लोगों से शादी विवाह में होने वाले अपव्यय

को रोकने तथा दहेज रहित सामूहिक विवाह पद्धति को अपनाने पर जोर दिया। समारोह में पिंकी संग किशन, राखी संग छोटे लाल, सोनिया संग अश्वनी कुमार, सोनी संग राम प्रकाश, शालिनी संग रजनीश, प्रीती संग संदीप पायल संग आशीष अमरावती संग संजय, ज्योति संग नरेन्द्र, सुषमा संग परदेश मे एक दूसरे संग फेरे लेकर अपना जीवन साथी चुना एवं साथ 2 जीने का संकल्प लिया। सभी जोड़ों ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, का संकल्प लिया। समिति ने सभी जोड़ों को आवश्यक गृहस्थी का सामान उपहार स्वरुप भेट किया तथा सुखमय वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्याम बाबू, राकेश शर्मा, विनोद विश्वकर्मा कुन्दन शर्मा, रामेश्वर शर्मा, शिवकुमार शर्मा, सुशील कुमार शर्मा, वेद प्रकाश शर्मा (राजू) शिव किशोर विश्वकर्मा, विजय कुमार विश्व भर्मा, गोरेलाल शर्मा, शिव बरन शर्मा, ओमप्रकाश शर्मा, राजेश शर्मा श्याम सुन्दर शर्मा, हरीशंकर शर्मा,शंकर शर्मा सुरेशबाबू शर्मा, रिशीकान्त शर्मा एवं जगदीश शर्मा ने वर-वधुओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

विजय रथ एरिया टू लाइफ मित्रा महासम्मेलन आयोजित

संवाददाता, कानपुर। मोतीझील लाजपत भवन सभागार में एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस एरिया उत्तर प्रदेश दो लाइफ मित्रा महासम्मेलन विजय रथ का (मुख्य अतिथि) क्षेत्रीय प्रबंधक उत्तर प्रदेश के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ लाजपत भवन में किया गया आयोजन जिसमें प्रदेश के कई शहरों से हजारों की संख्या में लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डिप्टी (रीजनल मैनेजर) दिवाकर शुक्ला (वरिष्ठ मंडल प्रबंधक) विवेक गौड़ व (मंडल प्रबंधक) प्रदीप दास व अमरजीत अरोड़ा मोहम्मद सादिक नियाजी आदि लोग इस अवसर पर उपस्थित रहे

खेलते समय लोडर ने बच्चे को कुचला, मौत, गुस्साए परिजनों ने सड़क पर लगाया जाम

संवाददाता, कन्नौज। जिले में घर के बाहर खेलते वक्त बच्चे को लोडर ने कुचल दिया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के कारण घटनास्थल पर भीड़ लग गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। लोडर चालक पर कार्रवाई का भरोसा देकर पुलिस ने परिजनों और ग्रामीणों को शांत कराया। घटना इंदरगढ़ थाना क्षेत्र के सकतपुर गांव की है। जहां के रहने वाले प्रदीप सक्सेना का 7 वर्षीय बेटा आर्यन सुबह 7.30 बजे घर के पास ही पुलिया पर खेल रहा था। तभी उधर से एक लोडर निकला, जिस पर डीजे लदा हुआ था। डीजे की आवाज सुनकर बच्चे सड़क पर पहुंच गए। जिसकी चपेट में आर्यन आ गया। इस दौरान वह बुरी तरह घायल हो गया। परिजन उसे आनन-फानन में एक निजी डॉक्टर के यहां ले गए, जहां उन्होंने बच्चे को मृत घोषित कर दिया। बच्चे की मौत से परिजन बिलख पड़े। उधर, घटना स्थल पर परिजनों के साथ ग्रामीण भी एकत्र हो गए और सड़क पर जाम लगाने का प्रयास करने लगे।

साबरमती से जेल रची गयी थी उमेश पाल की हत्या की साजिश

संवाददाता, प्रयागराज। विधायक राजू पाल हत्याकांड के गवाह उमेश पाल और उसके गनर की हत्या की साजिश का खुलासा करने में प्रदेश की पुलिस के साथ-साथ एसटीएफ ने अपनी पूरी ताकत झोंक दिया है। जिसमें रोज ही परत-दर-परत राज खुल रहे हैं। साबरमती जेल में रची गई थी हत्या कि साजिश और अतीक अहमद ने अपने खास गुर्गो गुलाम और गुड्डू मुस्लिम को उमेश कि हत्या कि जिम्मेदारी सौंपी थी। पूछ-ताछ के लिए जल्दी ही अतीक अहमद को उत्तर प्रदेश लाया जायेगा। प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ के दिशानिर्देश पर यूपी पुलिस तत्परता से कार्य कर रही है। शूटरों को पकड़ने के लिए पुलिस कि 10 टीमें लगाई गई हैं। माना जा रहा है कि हत्या की साजिश अहमदाबाद की साबरमती और बरेली जेल रची गयी। साबरमती जेल से जहां माफिया अतीक अहमद अपने गुर्गों को संभाला रहा था वहीं बरेली जिला कारागार से उसका भाई पूर्व विधायक अशरफ अपने करीबियों और गुर्गों से मोबाइल के जरिए सम्पर्क में रहता हैं। सूत्रों का कहना है कि वे ज्यादातर वाट्सएप काल पर बात करते हैं जिसे क्राइम ब्रांच की सर्विलांस सेल और दूसरी सुरक्षा एजेंसियां इंटरसेप्ट नहीं कर पाती हैं। इसके अलावा प्रयागराज से पारिवारिक लोग और करीबी अक्सर जेल में मिलने भी जाते हैं। ऐसे में पुलिस इस एंगल पर तहकीकात कर रही है कि जेल से पूरा खेल हुआ है। एसटीएफ बरेली और साबरमती जेल जाकर अतीक और उसके भाई अशरफ की शूटआऊट में भूमिका के बारे में छानबीन कर रही है।

उत्तर प्रदेश राज्य की सिविल पेंशनर्स परिषद के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन

संवाददाता

कानपुर नगर। उत्तर प्रदेश राज्य की सिविल पेंशनर्स परिषद लखनऊ का वार्षिक अधिवेशन गोविंद नगर स्थित खालसा इंटर कॉलेज में संपन्न हुआ जिसमें पेंशनरों की भारी संख्या में उपस्थिति हुई कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वेद प्रकाश पूर्व आईएएस ने दीप प्रज्वलित कर अधिवेशन का विधिवत शुभारंभ किया सिविल पेंशनर्स के महामंत्री आनंद किशोर बाजपेई ने अपने संबोधन में कहा कि करुणा काल में

आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद 18 माह तक महंगाई भत्ते की किस्त रोक दी गई जिसका भुगतान आज तक नहीं किया गया जिस का शीघ्र भुगतान किया जाए अधिवेशन में मुख्य रूप से वेद प्रकाश वर्मा शैलेंद्र कुमार सिंह साहब दिन यादव मोहन लाल मिश्रा एस के गुप्ता जयराम सिंह भदोरिया आरती शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के तत्वधान में विशाल भंडारे का आयोजन

संवाददाता, कानपुर। कानपुर राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय सिंह मर्तोलिया (भावी महापौर प्रत्याशी कानपुर) ने दक्षिणेश्वर हनुमान मंदिर जीटी रोड पर विशाल भंडारा का आयोजन किया गया! बाबा का भोग लगाने के बाद , प्रसाद वितरण किया गया !जिसमे हजारों श्रद्धालुओ ने हनुमान मंदिर के दर्शन कर के प्रसाद ग्रहण किया ! और श्री मर्तोलिया ने कहा कि इस प्रकार का आयोजन लगातार सभी मंदिरों में किया जाएगा ! जिससे धर्म के प्रति लोगो की आस्था बढ़ेगी ! और समाज में फैल

रही बुराइयों को, बेमानुस्यता को खत्म किया जा सकता ! हमारा लक्ष्य सभी धर्मों को एक सूत्र में बांधकर सभी के दिलों में प्यार मोहब्बत पैदा करना हमारा संकल्प है! इस तरह के आयोजन हर सप्ताह होते रहेंगे ! भंडारे वितरण में - श्यामदेव सिंह (कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदेश इंटक) ,अनुराग पाल, शिव शंकर भदौरिया ,सोनू ,हैप्पी , आदि लोग मौजूद रहे।

भाजपाइयों ने झाड़ू लगा, दिया स्वच्छता का संदेश

संवाददाता

कानपुर। कानपुर रविवार की सुबह प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम से पूर्व सुबह लगभग 9.00 बजे भाजपाइयों ने गोविंद नगर क्षेत्र के ब्लॉक -8, 9, 10, आर एवं एस ब्लॉक आदि मोहल्लों में नगर निगम के सफाई कर्मचारियों के साथ सघन स्वच्छता अभियान चलाया। भाजपाइयों ने हाथों में बड़ी बड़ी झाड़ू लेकर के सड़कों, फुटपाथों व पार्कों पर झाड़ू लगाई। भाजपाइयों ने झाड़ू लगाने के बाद पहले तो कूड़े को एक जगह इकट्ठा किया फिर स्वयं ही कूड़े को कूड़ा गाड़ी में भरकर गाड़ी खींचकर कूड़ा डंप स्थल तक ले गए । इस मौके पर भाजपाइयों ने कहा कि प्रधानमंत्री का सपना है कि हमारे देशवासी स्वस्थ एवं निरोगी

रहे। साफ- सफाई रहने से बीमारियां दूर रहती हैं और घर मोहल्ले में सुंदरता दिखाई देती है इसीलिए भाजपा समय-समय पर स्वच्छता अभियान चलाती रहती है। वक्ताओं ने आगे कहा कि देश व प्रदेश को स्वच्छ बनाने की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति, सरकार या किसी एक संस्था की नहीं है अगर देश का प्रत्येक नागरिक जिस दिन अपनी जिम्मेदारी समझे कि शहर, गली एवं मोहल्ला को साफ रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है। जिस दिन प्रत्येक नागरिक स्वच्छता अभियान से अपने आप को जोड़ लेगा तभी से निश्चित रूप से ही शहर स्वच्छ दिखने लगेगा।

कार्यक्रम के पश्चात सफाई मजदूरों को माला पहना सम्मानित किया गया।

स्वच्छता अभियान में प्रमुख रूप से विकास दुबे, प्रकाश वीर आर्य, राजेश श्रीवास्तव, हरिशंकर सिंह, अनुराग अग्निहोत्री, दिलीप सिंह,धर्मेंद्र राय ,रणविजय सिंह, शम्मी भला, गुंजन धर, मनोज पाल आदि मौजूद रहे।

बदलती लाइफस्टाइल के कारण हार्ट अटैक और ब्रेन स्ट्रोक का शिकार हो रहे लोग : डॉ विवेक प्रकाश अग्रवाल

ब्रेन स्ट्रोक से हर दो मिनट में एक व्यक्ति की हो रही है मौत

संवाददाता

हापुड़। हापुड़ में रेलवे रोड स्थित बंसल पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर,नियर जैना टॉकीज विशेषज्ञ डॉक्टर परामर्श के लिए ओ. पी. डी. स्टार्ट कर रहे है। डाक्टर विक्रांत बसल ने कहा कि हार्ट अटैक और ब्रेन अटेक की बढ़ती समस्याओं को देखते हुए मेट्रो हॉस्पिटल अपनी मल्टी स्पेशलिटी ओपीडी सेवाएं शुरु करने जा रहा है। जहां मेट्रो अस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टर प्रत्येक रविवार व सोमवार को सुबह 10रू00 से 1रू00 तक परामर्श देंगे। जिस से सभी हापुड़ वासियों को विशेषज्ञ डॉक्टर्स द्वारा सभी मरीजों

को लाभ मिलेगा। वहीं रविवार को एलेन रोड पर स्थित हापुड़ जिमखाना में पत्रकारों से रूबरू होते हुए डॉ विवेक प्रकाश अग्रवाल, सीनियर कंसलटेंट इंटरनॅशनल कार्डियो लॉजिस्ट, मेट्रो अस्पताल एवं हृदय संस्थान नोएडा ने बताया कि कोरोना महामारी के बाद से हार्ट अटेक के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। अच्छे खासे लोगों की अचानक चलते-फिरते, नाचते-गाते काल के गाल में समा रहे हैं। हार्ट अटेक के बढ़ते मामलों का बड़ा कारण बदलती जीवनशैली और खानपान है। लोग जंक फूड, तेल वाले खाद्य पदार्थ ज्यादा खाने लगे हैं। यह शरीर को कई तरह से नुकसान पहुंचाता है शरीर का कोलेस्ट्रॉल इससे बढ़ जाता है। इसी एल्कोहल, धूमपान करने से लिवर और फेफड़ों पर असर पड़ता है। साथ में शरीर के अन्य हिस्सों को भी प्रभावित कर देता है। कोरोना के बाद युवाओं में बॉडी बनाने को लेकर ज्यादा ही जोश देखने को मिला है। इसके लिए युवा तमाम तरह के सप्लीमेंट्स का यूज करने लगे हैं। ये बहुत ही खतरनाक होते हैं। इससे शरीर के कई ऑर्गन फेल हो सकते हैं। इसके अलावा शराब, सिगरेट व अन्य नशीले पदार्थ भी लोगों के दिल को कमजोर बनाते हैं। इसके अलावा अधिक एक्सरसाइज भी करना खतरनाक है। इससे दिल की गति तेज हो जाती है तो ब्लॉकेज कर सकती है। इसके अलावा नौकरी व अन्य कारणों से युवा स्ट्रेस भी बहुत ज्यादा लेने लगे है।

प्रजापति समाज का 9वां सामूहिक विवाह संपन्न

संवाददाता

कानपुर। कानपुर प्रजापति सभा द्वारा प्रजापति समाज का 9 वां सामूहिक विवाह का आयोजन प्रजापति भवन दामोदर नगर में 9 जोड़ो का विवाह सम्पन्न हुआ सभा व समाज के लोगो ने उन्हें सोने चांदी के आभूषण लोहे की अलमारी, बेड,वस्त्र एवं घर गृहस्थी के अन्य सामान व बर्तन आदि भेंट किया इस मौके पर प्रजापति सभा के अध्यक्ष जयकुमार प्रजापति, उपाध्यक्ष डा0 जे.पी. प्रजापति, अरविन्द कुमार महामंत्री चन्द्रपाल प्रजापति,सुदीप बर्धिक,वर्दिया राजीव चक्रवर्ती, केशव प्रसाद श्रवण कुमार, कृष्ण कुमार, रामऔतार, प्रेमशंकर, मुख्य संयोजक सुन्दरलाल प्रजापति, सहसंयोजक राजकुमार प्रजापति संरक्षक मुन्नालाल प्रजापति,ज्ञानदत्त वर्मा,सीताराम,संजय कुमार प्रजापति,मदनपाल सिंह, दिनेश प्रजापति, डा0 मनोज, रामपाल प्रजापति, रामचन्द्र, महिला मण्डल रचना प्रजापति,गायत्री प्रजापति एवं कानपुर प्रजापति सभा को दान देने वाले दानदाताओं आदि लोगो ने वर वधू को आशीर्वाद प्रदान किया। प्रजापति सभा द्वारा निम्न 9 जोड़ों का विवाह सम्पन्न हुआ तथा वरवधू ने अग्नि को साक्षी मानकर जीवनभर साथ निभाने का वचन दिया। रिंकू संग ओमी प्रजापति, अभिषेक प्रजापति संग प्रिया प्रजापति, विमल प्रजापति संग स्वाती प्रजापति, प्रीतम प्रजापति संग सुनीता देवी, मनोज कुमार प्रजापति संग संध्या प्रजापति, मोहित प्रजापति संग प्रीती देवी, रोहित कुमार प्रजापति संग काजल प्रजापति, सर्वेश प्रजापति संग ममता प्रजापति, राजेश प्रजापति संग मनीषा प्रजापति मौजूद रहे।

इफको फूलपुर की वॉलीवाल टीम बनी विजेता, क्रिकेट की टीम उपविजेता

वॉलीबाल की टीम (फूलपुर इकाई) के विजयी होने पर कार्यकारी निदेशक (इकाई प्रमुख) संजय कुदेशिया ने टीम को बधाई व शुभकामनाएं दी

संवाददाता

प्रयागराज। इफ को टाउनशिप के स्पोर्ट्स के मैदान मे इफको नैनो यूरिया तरल अंतर इकाई क्रिकेट-वॉलीबाल पाँच दिवसीय टूर्नामेंट का समापन इफ को आंवला इकाई में हुआ जिसमें इफको फूलपुर की टीम में अपनी विपक्षी टीम 3-1से हराया। टूर्नामेंट में इफ को फूलपुर इकाई,आंवला,कांडला, कलोल,पारादीप तथा इफ को मुख्यालय एवं विपणन के खिलाड़ियों ने भाग लिया। वॉलीबाल का फाइनल मुकाबला इफ को आंवला इकाई व इफ को फूलपुर इकाई की टीम के बीच हुआ। फूलपुर की टीम ने आंवला की टीम को 3-1 से पटकनी देकर टूर्नामेंट को अपने नाम किया। क्रिकेट

मुकाबले में पारादीप की टीम विजयी रही,फूलपुर की टीम को दूसरे स्थान पर संतोष करना पड़ा। पांच दिवसीय टूर्नामेंट के समापन समारोह के मुख्य अतिथि कलोल इकाई निदेशक डीजी इनामदार रहे। जबकि अन्य विशिष्ट अतिथि पारादीप इकाई के केजे पटेल रहे। आंवला इकाई प्रमुख राकेश पुरी ने विजेताओं को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र दिए। वॉलीबाल की टीम (फूलपुर इकाई) के विजयी होने पर कार्यकारी निदेशक (इकाई प्रमुख) संजय कुदेशिया ने टीम को बधाई व शुभकामनाएं दी। वॉलीबाल टीम के प्रबंधक जी.एस.पाण्डेय व कप्तान एम.एस.सिद्दीकी ने जीत दिवंगत इफ को ऑफ ीसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष स्वर्गीय संजय कुमार मिश्र को समर्पित किया। इफ को ऑफि सर्स एसोसिएशन के महामंत्री स्वयं प्रकाश एवं जनसम्पर्क अधिकारी सोनू तिवारी समापन समारोह में मौजूद रहे। इफको कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विनय यादव ने वॉलीबाल टीम की जीत पर हर्ष व्यक्त किया।

भारतीय चिंतन, त्याग और अनुशासन का सामाजिक जीवन का प्रभाव

पाश्चात्य परम्परा में जीवन को टुकड़ों में देखने की आदत : प्रो.रिपुसूदन

संवाददाता, प्रयागराज। राजनीति विज्ञान विभाग के अंतर्गत स्थापित दीनदयाल उपाध्याय पीठ के द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें आज दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग कर मार्गदर्शन किए जिसमें विशेष रूप से प्रो. हरकेश सिंह पूर्व कुलपति जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के द्वारा समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि का स्वागत है राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो.पंकज कुमार ने किया। मुख्य अतिथि अपनी बात रखते हुए भारतीय चिंतन परंपरा त्याग अनुशासन और उसके सामाजिक जीवन पर प्रभाव का विस्तार से मार्गदर्शन किया साथ है। उन्होंने कहा कि भारतीय राजनीतिक जीवन में जिन मनीषियों का जिक्र किया जाता है उसमें प्रमुखत: पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम लेते हुए उनके एकात्म मानववाद ,राष्ट्र, विराट,चिति आदि पक्षों को व्यक्त किया। साथ ही मुख्य अतिथि ने बताया किस प्रकार से न केवल भारत वरन विश्व की समस्याओं के समाधान में उनका यह चिंतन और उनका व्यवहार प्रासंगिक है। इसके साथ ही तकनीकी सत्र में डा. अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के प्रो.रिपुसूदन सिंह ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में स्पष्ट किया। पाश्चात्य परंपरा से तुलना करते हुए स्पष्ट करते हुए कहा कि पाश्चात्य परंपरा में जीवन को टुकड़ों में देखने की परंपरा है जिसकी वजह से व्यक्ति और व्यक्ति एक दूसरे के विरुद्ध खड़े पाए जाते हैं।जबकि भारतीय परंपरा जिसकी बात पंडित दीनदयाल उपाध्याय करते हैं जो व्यष्टि से समष्टि की बात करती है।जो व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र और अंतत: विश्व तक जाती है ।यानी राष्ट्र और राष्ट्रीय चिंतन विश्व व्यवस्था का एक पक्ष है न कि उसका प्रतिद्वंदी। विश्व व्यवस्था के पोषण से राष्ट्र का पोषण होगा और राष्ट्र के पोषण और मजबूती से विश्व व्यवस्था के पोषण में मार्ग प्रशस्त होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रीय चिंतन वसुधैव कुटुंबकम का पोषक है।काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो.तेज प्रताप सिंह ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विदेश नीति के संदर्भ में विचारों को व्यक्त किया तथा उन्होंने उन चुनौतियों और पक्षों को भी दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन के परिपेक्ष में उजागर किया जो भारत को परम वैभव और विश्व गुरु बनाने में साधक हो सकते हैं।

कानपुर परिक्षेत्र से चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए

संवाददाता

कानपुर। कानपुर उ0नि0 ना0 पु0, प्लाटून कमाण्डर पीएसी एवं अग्निशमन द्वितीय सीधी अभ्यर्थियों को दिए नियुक्ति पत्र पुलिस कमिश्नरेट कानपुर नगर एवं कानपुर परीक्षेत्र के कुल 617 अभ्यर्थी हुए लाभान्वितभर्ती

-एचबीटीयू के शताब्दी भवन में आयोजित कार्यक्रम में बांटे गए नियुक्ति पत्र

- प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री ने वीडियो संदेश के माध्यम से दी बधाई एवं कर्तव्य पथ के लिए किया प्रेरित - पुलिस कमिश्नरेट कानपुर नगर, कानपुर देहात, इटावा, औरया, फ्तेहगढ़ और कन्नौज जनपदों से आए थे अभ्यर्थी कानपुरा उप निरीक्षक ना0पु0, प्लाटून कमाण्डर पीएसी एवं अग्निशमन द्वितीय सीधी भर्ती 2020-21 के अन्तर्गत कानपुर कमिश्नरेट एवं कानपुर परिक्षेत्र से चयनित अभ्यर्थियों को रविवार के दिन शताब्दी भवन, एच0बी0टी0यू0 कैंपस में नियुक्ति पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। आयोजन पुलिस महानिरीक्षक, कानपर परिक्षेत्र, प्रशांत कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मा0 मुख्यमंत्री उ0प्र0 योगी आदित्यनाथ द्वारा वर्चुअल माध्यम से इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर, लखनऊ से किया गया एवं मा0 मुख्यमंत्री द्वारा कुछ अभ्यर्थियों को लखनऊ में ही नियुक्ति पत्र वितरण भी किया गया। मा0 प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वर्चुअली माध्यम से वीडियो संदेश के माध्यम से सभी अभ्यर्थियों को बधाई संदेश दिया गया। कानपुर कमिश्नरेट से उपनिरीक्षक ना0पु0 के पद पर 250, कानपुर परिक्षेत्र के समस्त जनपदों से 321 (कानपुर देहात 87, इटावा- 91, औरैया 55, फ्तेहगढ़ 37, कन्नौज 51) एवं कानपुर कमिश्नरेट व कानपुर परिक्षेत्र से पीएसी प्लाटून कमाण्डर के पद पर 36 एवं दोनों पदों के 617 अभ्यर्थी चयनित हुये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, पुलिस आयुक्त कानपुर कमिश्नरेट बी0पी0 जोगदण्ड एवं पुलिस महानिदेशक कानपुर जोन आलोक सिंह द्वारा उपस्थित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित करते हुये पुलिस विभाग में आने पर बधाई दी गई एवं उप निरीक्षक के पदीय दायित्वों के बारे में बताया एवं उसका निर्वहन लगन, परिश्रम, ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से करने के लिये प्रेरित किया। नियुक्ति पत्र वितरण समारोह के मुख्य अतिथि पुलिस आयुक्त कानपुर नगर बी0पी0 जोगदण्ड एवं अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन आलोक

सिंह व संयुक्त पुलिस आयुक्त आनन्द प्रकाश तिवारी, अपर पुलिस आयुक्त आनन्द कुलकर्णी, पुलिस उपायुक्त यातायात रवीना त्यागी, सेनानायक 37वीं पीएसी प्रदीप गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सोशल स्टॉक एक्सचेंज लॉन्च करने की एसईबीआई से मंजूरी

सोशल वर्क करने वाले संगठन फंड जुटा सकेंगे, एनएसई का अलग सेगमेंट होगा ये एक्सचेंज

एजेंसी, नयी दिल्ली । नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया यानी एनएसई को सोशल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) लॉन्च करने के लिए सिक्योरिटी एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) से अंतिम मंजूरी मिल गई है। एक्सचेंज को सेबी से सैद्धांतिक मंजूरी पहले मिल चुकी थी और वह अंतिम मंजूरी का इंतजार कर रहा था। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2019-20 के अपने केंद्रीय बजट भाषण में एसएसई को बनाने का प्रस्ताव दिया था। ये एक्सचेंज एनएसई का अलग सेगमेंट होगा। ये सोशल सेक्टर में काम करने वाले संगठनों को बाजार से फं ड जुटाने में मदद करेगा। यानी अब प्राइवेट कंपनियों की तरह सोशल एंटरप्राइजेज, नॉन प्रॉफिट ऑर्गेनाइजेशन (एनपीओ) या फॉर प्रॉफिट सोशल एंटरप्राइजेज (एफपीई) भी खुद को शेयर बाजार में लिस्ट करा सकेंगे और पैसे जुटा सकेंगे। महामारी के दौरान सोशल स्टॉक एक्सचेंज के कॉन्सेप्ट ने पॉपुलेरिटी हासिल की थी। सेबी के बनाए एक वर्किंग ग्रुप ने सोशल स्टॉक एक्सचेंज के लिए फ्रेमवर्क दिया था। एंटरप्राइजेज को एक्सचेंज में लिस्टिंग के लिए वर्किंग ग्रुप के निर्धारित सोशल एक्टिविटी के 16 ब्रॉड एरिया में से किसी एक में एंगेज होना होगा। कॉर्पोरेट फाउंडेशन, ट्रेड एसोसिएशन, राजनीतिक और धार्मिक संगठन, इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनियां सोशल स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होने के एलिजिबल नहीं हैं।

स्पाइसजेट 5 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच सकती है

कार्लाइल एविएशन 100 मिलियन डॉलर बकाए को इक्विटी में बदलेगी

एजेंसी, नयी दिल्ली । लो-कॉस्ट कैरियर स्पाइसजेट लिमिटेड के सबसे बड़े लेजर अमेरिका के कार्लाइल एविएशन पार्टनर्स को एयरलाइन की 5 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक स्पाइसजेट पर कार्लाइल एविएशन का 100 मिलियन डॉलर से ज्यादा का बकाया है। ऐसे में कर्ज को 5 प्रतिशत हिस्सेदारी में बदलने की योजना पर काम किया जा रहा है। कार्लाइल ने एयरलाइन को 13 बोइंग 737 विमान लीज पर दिए हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि कार्लाइल ग्रुप के स्वामित्व वाली कार्लाइल एविएशन पार्टनर्स, स्पाइसजेट में 5 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ-साथ कार्गो आर्म स्पाइसएक्सप्रेस में कन्वर्टिबल डिबेंचर लेगी। इसे फ्यूचर डेट पर इक्विटी में बदला जा सकेगा। स्पाइसजेट बकाया राशि को इक्विटी में बदलने के लिए अन्य लेनदारों के साथ भी बातचीत कर रही है। एयरलाइन ने पिछले 2 साल में कई बार फंड रेज करने के प्रयास किए हैं। स्पाइसजेट ने पिछले साल कहा था कि वह फ्यूचर प्लान पर काम करने के लिए 20 करोड़ डॉलर तक जुटाने के लिए इन्वेस्टमेंट बैंकर्स के साथ बात कर रही है। एयरलाइन पिछले 4 साल से घाटे में चल रही है। स्पाइसजेट को एफ वाई19, एफ वाई20, एफ वाई21 और एफ वाई22 में क्रमश: 316 करोड़ रुपए, 934 करोड़ रुपए, 998 करोड़ रुपए और 1,725 करोड़ रुपए का नेट लॉस हुआ है।

वन नेशन वन राशन कार्ड योजना से लोगों को होगा फायदा

इसका क्या महत्त्व

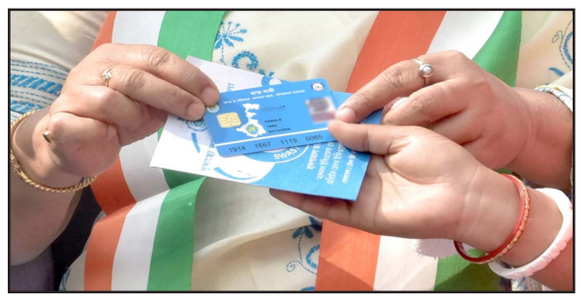

एजेंसी, वन नेशन वन राशन कार्ड (ओएनओआरसी) योजना केंद्र में सत्तारूढ़ नरेंद्र मोदी सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसके तहत कोई भी जरूरतमंद राशनकार्ड धारक व्यक्ति देश के किसी भी हिस्से में स्थित सरकारी जनवितरण प्रणाली की दुकानों पर अपना कार्ड दिखाकर अपने हिस्से का सरकारी राशन उठा सकता है। बता दें कि यह योजना प्रवासी श्रमिकों के खाद्यान्न जरूरतों की पूर्ति और उनके आर्थिक हितों की रक्षा करने के लिए लाई गई है। हालांकि इसका फायदा अन्य लोग भी उठा सकते हैं और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत देश के किसी भी हिस्से में अवस्थित उचित मूल्य की दुकान से सस्ता खाद्यान्न खरीद सकते हैं। बता दें कि गत वर्ष असम सरकार द्वारा वन नेशन वन राशन कार्ड (ओएनओआरसी) योजना को लागू कर देने के साथ ही ओएनओआरसी कार्यक्रम को देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सफलतापूर्वक लागू किया जा चुका है, जिससे पूरे देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई है। वहीं इस योजना का अधिकतम लाभ उठाने के लिये सरकार ने श्मेरा राशनश् नामक एक मोबाइल एप्लीकेशन भी शुरू किया है। जिस पर लाभार्थियों को उपयोगी रीयल-टाइम जानकारी प्रदान किया जा रहा है, जो 13 भाषाओं में उपलब्ध है। गौरतलब है कि कोविड-19 महामारी के पिछले दो वर्षों के दौरान, ओएनओआरसी योजना ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के लाभार्थियों, विशेष रूप से प्रवासी लाभार्थियों को रियायती खाद्यान्न सुनिश्चित कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सनद रहे कि ओएनओआरसी योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के तहत लागू की जा रही है। जिसके तहत प्रवासी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एमएनएफ एसए), 2013 के लाभार्थी देश में कहीं भी अपनी पसंद के किसी भी उचित मूल्य की दुकान (एफपीएस) से अपने हिस्से के खाद्यान्न कोटे की खरीद कर सकते हैं। यह प्रणाली उनके परिवार के सदस्यों को घर पर यदि कोई हो तो उसे राशन कार्ड पर शेष खाद्यान्न का दावा करने की अनुमति देती है। बता दें कि ओएनओआरसी का कार्यान्वयन अगस्त 2019 में शुरू किया गया था। वहीं, 2022 में असम प्रान्त, जो देश का 36 वां राज्य था, में यह योजना लागू हो चुकी है। इसी के साथ यह योजना पूरे देश में लागू हो चुकी है। सभी एनएफ एसए लाभार्थियों को उनके मौजूदा राशन कार्डों की सुवाह्यता के माध्यम से देश में कहीं भी उनकी खाद्य सुरक्षा के लिये आत्मनिर्भर बनने हेतु सशक्त बनाना है। इसके साथ ही उनकी पसंद के किसी भी उचित मूल्य की दुकान से उनके हकदार सब्सिडी वाले खाद्यान्न (आंशिक या पूर्ण) को निर्बाध रूप से उठाना है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों को अपनी पसंद के उचित दर दुकान से अपने मूल स्थान किसी भी स्थान पर उसी राशन कार्ड पर शेष/आवश्यक मात्रा में खाद्यान्न उठाने में सक्षम बनाना है। पहला, यह भोजन के अधिकार को सक्षम करता है। कहने का आशय यह कि पूर्व में राशन कार्डधारक राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत सब्सिडीयुक्त खाद्यान्न की अपनी पात्रता का लाभ केवल संबंधित राज्य के अंदर निर्दिष्ट उचित मूल्य की दुकान (एफ पीएस) से ही प्राप्त कर सकते थे।

पाकिस्तानी सुरक्षाबलों ने खैबर पख्तूनख्वा में टीटीपी के छह आतंकवादी किए ढेर

एजेंसी, पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा में सुरक्षाबलों के एक अभियान में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के छह आतंकवादी मारे गए। पुलिस सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों के खिलाफअभियान आतंकवाद रोधी विभाग और लक्की मारवत जिले की पुलिस ने संयुक्त रूप से इलाके में टीटीपी लड़ाकों के होने की खुफिया सूचना मिलने के बाद शुरू किया था। पुलिस अधिकारी के मुताबिक, मारे गए आतंकवादी जिले के अब्बास्सा खटक थाने पर हमले की योजना बना रहे थे। उन्होंने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई की गई और आतंकवादियों तथा सुरक्षाबलों के बीच हुई मुठभेड़ में टीटीपी के छह आतंकवादी मारे गए। उन्होंने बताया कि मारे गए आतंकवादियों के पास से हथियार, गोला-बारूद और हथगोले मिले हैं। आतंकवाद रोधी विभाग ने इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया है। प्रतिबंधित टीटीपी के हमले हाल के महीनों में बढ़े हैं और माना जा रहा है कि पड़ोसी अफगानिस्तान में तालिबान का शासन आने के बाद टीटीपी मजबूत हुआ है। टीटीपी कई आतंकवादी संगठनों का सामूहिक मंच है जिसकी स्थापना 2007 में की गई थी।

तालिबान सरकार ने फिर खोला पाकिस्तान के साथ लगा महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग

एजेंसी, पेशावर। अफगानिस्तान के तालिबान शासकों ने पाकिस्तान के साथ लगी एक महत्वपूर्ण सीमा को फिर से खोल दिया, जिससे पिछले कुछ दिनों में पहली बार खाद्य सामग्री और अन्य सामान ले जाने वाले हजारों ट्रक को आगे बढ़ने की अनुमति मिली। तालिबान द्वारा सीमा को बंद करने सहित कई मुद्दों पर चर्चा करने के लिए पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल के काबुल जाने के बाद दोनों देशों के बीच तोरखम क्रॉसिंग पर यातायात सुगम होने लगा। अफगानिस्तान के नांगरहार प्रांत में तालिबान द्वारा नियुक्त अधिकारियों ने तोरखम सीमा को फिर से खोलने की पुष्टि की। पाकिस्तान में अफगानिस्तान दूतावास ने भी ट्विटर पर फिर से सीमा खोले जाने की सूचना दी। पाकिस्तान-अफगानिस्तान ज्वाइंट चौंबर ऑफकॉमर्स एंड इंडस्ट्री के निदेशक जियाउल हक सरहदी ने कहा कि उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में खैबर दर्रा होकर हजारों वाहन, सब्जियां और फल जैसे ताजा उत्पाद ले जाने लगे। ताजा घटनाक्रम पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ख्वाजा मोहम्मद आसिफके काबुल के अघोषित दौरे के एक दिन बाद आया है, जहां उन्होंने आर्थिक मामलों के लिए तालिबान द्वारा नियुक्त उप प्रधानमंत्री मुल्ला अब्दुल गनी बरादर सहित तालिबान के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की थी।

ईजी मनी के लिए ट्रेडिंग करने वालों की कमाई नहीं

शेयर बाजार में रिटेल निवेशकों की भागीदारी 34 महीनों में सबसे कम

एजेंसी, मुंबई । शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव बढ़ने का सीधा असर रिटेल निवेशकों की भागीदारी पर हुआ है। घरेलू बाजारों में बीते माह व्यक्तिगत निवेशकों की हिस्सेदारी घटकर 34 महीनों के निचले स्तर पर आ गई। एनएसई पर एक्टिव ट्रेडरों की संख्या भी लगातार आठवें माह घटी है। जनवरी में सेंसेक्स 1,291 अंक टूटा था। एनएसई के आंकड़ों के मुताबिक, बीते माह कैश मार्केट में रिटेल निवेशकों ने रोजाना औसतन 22,829 करोड़ रु. का लेनदेन किया। ये मार्च 2020 से अब तक का सबसे निचला स्तर है। ये फरवरी 2021 के पीक 58,409 करोड़ से भी 61: कम है। तब से अब तक कुल ट्रांजैक्शंस में रिटेल निवेशकों की हिस्सेदारी 66: से घटकर 44: रह गई।एनएसई पर जनवरी में एक्टिव ट्रेडिंग अकाउंट की संख्या दिसंबर, 2022 के मुकाबले 3: घटकर 3.4 करोड़ रह गई। इस मामले में लगातार आठवें महीने गिरावट आई। बीते साल जून में ये आंकड़ा 3.8 करोड़ था। एलकेपी सिक्युरिटीज के रिसर्च हेड एस. रंगनाथन ने कहा कि मौजूदा माहौल तनाव भरा है। ऐसे में बाजार में टिकने के लिए काफी सब्र की जरूरत होती है। रिटेल निवेशकों में इतना सब्र नहीं होता। उन्होंने रिटेल निवेशकों की भागीदारी घटने की तीन वजहें गिनाईं.. एक्सिस सिक्युरिटीज के एमडी बी. गोपकुमार ने कहा, 'कुछ महीनों में रिटेल निवेशकों ने शेयर बाजार से ज्यादा कमाई नहीं की है। इस बीच मिड-कैप और स्मॉल-कैप शेयरों में भारी उतार-चढ़ाव का रिटेल निवेशकों की भागीदारी पर असर होना स्वाभाविक है। रिटेल निवेशक छोटी कंपनियों के शेयर ज्यादा पसंद करते हैं। एक साल से इस कैटेगरी के शेयरों में गिरावट आई है।

इलेक्ट्रिक स्कूटर इंडी हुआ लॉन्च

फुल चार्ज पर देगा 120 किलोमीटर तक की रेंज, कीमत 1.25 लाख रुपए से शुरू

एजेंसी, नयी दिल्ली । बेंगलुरु की इलेक्ट्रिक स्टार्ट-अप कंपनी रिवर ने अपना नया इलेक्ट्रिक स्कूटर इंडी लॉन्च किया है। ये स्कूटर फुल चार्ज 120 किलोमीटर तक की राइडिंग रेंज (इको मोड पर) देगा। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर की शुरुआती कीमत 1.25 लाख रुपए (एक्स-शोरूम) रखी गई है। रिवर ने अपने इस ई-स्कूटर में 4 केएचवाई क्षमता वाले बैटरी पैक के साथ 6.7 केवाई पावर वाली इलेक्ट्रिक मोटर दी गई है। ये स्कूटर 3.9 सेकंड में 40 किमी,घंटा की स्पीड पकड़ सकता है। इसकी बैटरी को 5 घंटे में 0 से 80: तक चार्ज किया जा सकता है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर को फुल चार्ज करने पर 120 किलोमीटर तक की राइडिंग रेंज (इको मोड पर) मिलेगी। वहीं इसकी टॉप स्पीड 90 किलोमीटर,घंटा की है। इंडी ई-स्कूटर में तीन राइडिंग मोड ईको, राइड और रश मिलेंगे। कंपनी के अनुसार इंडी ई-स्कूटर में कुल 55-लीटर का शानदार स्पेस उपलब्ध है, जिसमें 43 लीटर बूट स्पेस और 12 लीटर ग्लव बॉक्स स्पेस है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में डिजिटल स्क्रीन, दो यूएसबी चार्जिंग पोर्ट और रिवर्स पार्किंग असिस्ट फीचर भी मिलेंगे। कंपनी अपने इस स्कूटर की डिलीवरी अगस्त 2023 में शुरू कर सकती है। भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की डिमांड और तादाद तेजी से बढ़ रही है। लेकिन उस अनुपात में पब्लिक चार्जिंग स्टेशनों की तादाद नहीं बढ़ रही। ईवी चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर की नोडल एजेंसी ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी के मुताबिक अभी तक देश में 5,254 पब्लिक ईवी चार्जिंग स्थापित किए गए हैं। जबकि वाहन पोर्टल के डेटा के मुताबिक देश में कुल ईवी की संख्या 20.65 लाख से भी अधिक है।

बाइडन के इस कदम से बढ़ेगी ड्रैगन की टेंशन, चीन की धमकी के बीच अमेरिका ताइवान में भेजेगा अपनी सेना

एजेंसी, चीन के साथ बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका प्रशिक्षण के लिए ताइवान में 100 से 200 सैनिकों को भेजने की तैयारी कर रहा है। पश्चिमी मीडिया ने एक अमेरिकी अधिकारी के हवाले से ये दावा किया गया है। जिसमें कहा गया है कि ये सैनिक ताइवान के सैनिकों को ट्रेनिंग देंगे। ताइवान जाने वाले सैनिकों में नेशनल गॉर्ड्स, स्पेशल ऑफिसर, यूएस मरीन शामिल हैं। इससे पहले दावा किया गया था कि एक साल पहले ताइवान में करीब 30 अमेरिकी सैनिकों को तैनात किया गया था। अधिकारी ने दावा किया कि ताइवान जाने वाले अमेरिकी सैनिक चीन से संभावित युद्ध का मुकाबला करने के लिए ताइवान के सैनिकों को ट्रेनिंग देंगे। अधिकारियों में से एक ने कहा कि बढ़ी हुई सैनिकों की सही संख्या स्पष्ट नहीं थी, लेकिन यह कदम संयुक्त राज्य भर में उड़ान भरने वाले एक चीनी जासूसी गुब्बारे के बाद तनाव से संबंधित नहीं है। गुब्बारे की घटना ने वाशिंगटन में अफरा तफरी मचा दी और विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन को बीजिंग की यात्रा रद्द करने के लिए मजबूर कर दिया। पेंटागन के एक प्रवक्ता ने कहा कि ताइवान के लिए हमारा समर्थन और रक्षा संबंध पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना द्वारा पेश किए गए मौजूदा खतरे के खिलाफ है। इस खबर को सबसे पहले वॉल स्ट्रीट जर्नल ने रिपोर्ट किया था। ताइवान की आधिकारिक सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने इसी हफ्ते खबर दी थी कि करीब 500 सैनिकों की एक बटालियन इस साल ट्रेनिंग के लिए अमेरिका जाएगी। चू ने अप्रत्यक्ष रूप से पुष्टि की कि कुछ सैनिक प्रशिक्षण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जाएंगे जो अतीत की तुलना में अधिक सामरिक होगा, लेकिन संख्या का विवरण नहीं दिया। चीन ताइवान को एक स्वच्छंद प्रांत के रूप में देखता है और उसने इस द्वीप को बलपूर्वक लेने से इनकार नहीं किया है। ताइवान का कहना है कि वह एक स्वतंत्र देश है और वह अपने लोकतंत्र और स्वतंत्रता की रक्षा करेगा।

ईरान ने लिया बड़ा फैसला

तालिबान को सौंप देगा अपना तेहरान का दूतावास

एजेंसी, तेहरान ईरान ने एक बड़ा फैसला लेते हुए अपना दूतावास तालिबान को सौंपने का ऐलान किया है। ईरान अगले शनिवार को तेहरान में अफगान दूतावास को तालिबान को सौंप देगा। अफगानिस्तान इंटरनेशनल के सूत्रों ने इस खबर की पुष्टि की है लेकिन 15 राजनयिकों ने तालिबान के साथ काम न करने का फै सला किया है। इसके बाद इस्लामिक रिपब्लिक ने दूतावास को बंद कर दिया है और इन राजनयिकों को इस जगह में प्रवेश करने से रोक दिया है। इससे पहले ईरान ने जनवरी में 3000 से अधिक अफगान शरणार्थियों को अपने देश से निकाल दिया था। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, हाल ही में इन शरणार्थियों को इस्लाम कला और पुले अब्रीशम सीमाओं से जबरदस्ती अफगानिस्तान भेजा गया। अफगानिस्तान में तालिबान की अंतरिम सरकार के शरणार्थी व प्रत्यावर्तन मंत्रालय के अनुसार, 24 और 25 जनवरी को लगभग 3123 अफगान प्रवासियों को ईरान से निष्कासित कर दिया गया। ईरान में हाल के दिनों में अफगान नागरिकों को हिरासत में लिया गया है और जबरन अफगानिस्तान भेज दिया गया है। अफगानिस्तान के विदेश मंत्रालय के अनुसार, तालिबान के अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज होने के बाद कई अफगानों ने जीवन और भयानक आर्थिक स्थितियों की चिंता के कारण देश छोड़ दिया था। वर्तमान में ईरान में 40 लाख से अधिक अफगान नागरिक रहते हैं। तालिबान के अधिकारियों ने कहा है कि अफगान शरणार्थी हेरात और निमरूज प्रांतों के सीमाओं से अफगानिस्तान में प्रवेश कर चुके हैं।साथ ही उन्होंने ईरानी अधिकारियों से अफगान शरणार्थियों के साथ उचित व्यवहार करने की अपील की। तालिबान ने अगस्त 2021 में अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद तालिबान के उत्पीड़न और मौत के डर से हजारों अफगान नागरिक देश छोड़कर भाग गए और बड़ी संख्या में अफगान नागरिकों ने दो पड़ोसी देशों ईरान और पाकिस्तान में शरण ली है।

मंदिरों के बाद, ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन में खालिस्तानी समर्थकों ने भारतीय दूतावास को बनाया निशाना, फहराया अपना झंडा

एजेंसी, खालिस्तानी समूहों द्वारा ऑस्ट्रेलिया में मंदिरों में तोड़फोड़ करने के कुछ दिनों बाद अब ब्रिस्बेन में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमला किया गया। खालिस्तानी समर्थकों ने भारतीय वाणिज्य दूतावास पर खालिस्तानी झंडे भी फहराए। यह हमला 21 फरवरी को क्वींसलैंड के ब्रिस्बेन में हुआ था। ब्रिसबेन में भारत की वाणिज्य दूत अर्चना सिंह ने 22 फरवरी को कार्यालय में खालिस्तान का झंडा लगा हुआ पाया। बता दें कि इससे पहले मेलबर्न के अल्बर्ट पार्क स्थित इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) मंदिर (जिसे हरे कृष्ण मंदिर के रूप में भी जाना जाता है) के प्रबंधन ने 23 जनवरी को पाया कि मंदिर की दीवार पर तोड़फोड़ की गई है और जिसपर आपत्तिजनक वाक्यांश 'हिन्दुस्तान मुर्दाबाद' लिखा हुआ है। इसी तरह विक्टोरिया के कैरम डाउन्स स्थित ऐतिहासिक श्री शिव विष्णु मंदिर में 16 जनवरी को तोड़फोड़ हुई थी। मेलबर्न स्थित स्वामीनारायण मंदिर की दीवारों पर असमाजिक तत्वों ने 12 जनवरी को भारत विरोधी नारे लिखे।

बॉनी कपूर को याद आई श्रीदेवी

बॉलीवुड की सबसे फेमस एक्ट्रेस श्रीदेवी को दो दिन पहले उनकी बेटी जाहन्वी कपूर ने मां को याद किया था बोनी कपूर भी पत्नी श्रीदेवी को याद कर रहे है, सोशल मीडिया पर बोनी कपूर ने एक पोस्ट सांझा की है जिसमें बॉनी कपूर के साथ उनका पूरा परिवार नजर आ रहा है। बता दें बॉलीवुड इंडस्ट्री में श्रीदेव का नाम हमेशा हमेशा के लिए अमर है, एक्ट्रेस के निधन ने पूरी इंड्रस्टी को शॉक्ड कर दिया था, श्रीदेवी का निधन दुबई में अपने परिवार के साथ शादी में शामिल हुई थी इस दौरान उनको मृतक बाथरूम में पाया गया था। वही श्रीदेवी की आखरी फोटो को बॉनी कपूर द्वारा शेयर किया गया है जिसमें वो अपने भतीजे को शादी मे सजी धजी नजर आ रही है। वही 5 साल के निधन के एक दिन पहले बोनी कपूर ने दिल छू लेने वाले कैप्शन के साथ तस्वीर शेयर की है। जिसमें उन्होंने लिखा आखिरी तस्वीर ... थ्रो बैक तस्वीर में श्रीदेवी ग्रीन और गोल्डन कलर के एथनिक आटफिट में बेहद खूबसूरत दिख रही थीं जबकि खुशी कपूर पेस्टल पीच लहंगे में नजर आ रही हैं। तस्वीर में श्रीदेवी के बगल में बोनी कपूर नजर आ रहे हैं। बता दे दो दिन पहले बोनी कपूर ने श्रीदेवी की एक सोलो फेटो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की थी जिसमें उन्होंने नोट लिखा 5 साल पहले आप हमें छोड़ गई थी आपका प्यार और यादें हमें आगे बड़ती रहेंगी। साथ ही बोनी कपूर ने पोस्टर भी शेयर किया था जिस पर उन्होंने लिखा– जो चला गया मुझे छोड़ कर को आज तक मेरे साथ है। बता दे जाहन्वी कपूर ने भी दो दिन पहले मां को याद कर तस्वीर शेयर की थी जिसपर जाह्नवी ने लिखा, मैं आज भी हर जगह आपको ढूंढती हूं मां, फिर भी मैं जो कुछ भी करती हूं वह करती हूं, इस उम्मीद में कि मैं आपको गर्व महसूस करा रही हूं। मैं जहां भी जाती हूं और जो कुछ भी करती हूं– वह आप पर ही शुरू और खत्म होता है।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

दमदार रोल में एक बार फिर जबरदस्त एंट्री मारने जा रही है रानी मुखर्जी, इस किरादर में आएंगी नजर

बॉलीवुड में 90 के दशक की कई ऐसी हिट एक्ट्रेस है जो उस वक्त अपनी एक्टिंग से लोगों को दीवाना बना देती थी। लेकिन गुजरते वक्त के साथ कुछ एक्ट्रेसेस ने अपने करियर पर फुलस्टॉप लगा दिया हैं। लेकिन इनमे से कुछ एक्ट्रेस ऐसी भी है जिन्होंने एक बार फिर से परदे पर कमबैक करने का सोचा। अब इन्ही एक्ट्रेसेस की लिस्ट में एक नाम रानी मुखर्जी का भी शामिल हैं। जहां एक्ट्रेस से वापस से परदे पर क्या वापसी की हैं। रानी मुखर्जी की एक्टिंग का तो वाकई कोई जवाब ही नहीं हैं। एक्ट्रेस हर एक किरदार में बखूबी नजर आती हैं। ऐसे में रानी मुखर्जी एक बार फिर अपने एक नए और दमदार किरदार में वापस लौट आई हैं। जिसे देखने के बाद आप भी हैरान रह जाएंगे। एक्ट्रेस की हाल ही में फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे का ट्रेलर रिलीज हुआ हैं। ट्रेलर में एक्ट्रेस काफी दमदार रोल में नजर आ रही हैं। मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे के ट्रेलर की शुरुआत मिसेज चटर्जी के किरदार से शुरू होती है, जो कोलकाता को छोड़कर नॉर्वे आकर अपने पति और बच्चों के साथ रहती हैं। मिसेज चटर्जी की जिंदगी खुशहाल चल रही होती है कि एक दिन कुछ ऐसा होता है जो सब कुछ बदल देता है। उनके दोनों बच्चों को कानून का हवाला देकर उनसे छीन लिया जाता है और कहा जाता है कि वह एक अच्छी मां नहीं हैं। इसके बाद मिसेज चटर्जी की अपने बच्चों को वापस पाने की लड़ाई शुरू होती है और वह पूरे देश के खिलाफ खड़ी हो जाती हैं। इसी के साथ ट्रेलर में कई ऐसी चीजे दिखाई गयी है जो दिल जीत लेगी। ट्रेलर में एक मां और बच्चे के बीच के रिश्तें को बखूबी दिखाने की कोशिश की गयी हैं। बता दे की इस फिल्म के लिए रानी मुखर्जी ने काफी ज्यादा मेहनत की हैं। साथ ही इस फिल्म से एक्ट्रेस की ढेरो उमीदे भी जुडी हुई हैं। मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे 17 मार्च को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। इस फिल्म में रानी मुखर्जी के अलावा जिम सरभ, नीना गुप्ता और अनिर्बान भट्टाचार्य मुख्य भूमिका में हैं।

अक्षय कुमार ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, 3 मिनट में क्लिक कर ली इतनी सारी सेल्फी

बॉलीवुड के खिलाडी कुमार कहे जाने वाले अक्षय कुमार इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म को लेकर खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। दरअसल अक्षय कुमार की सेल्फी रिलीज हो रही हैं। ऐसे में अक्षय अपने फिल्म के प्रमोशन में काफी ज्यादा बीजी नजर आ रहे हैं।

लेकिन इस बीच अपने फिल्म के प्रमोशन के दौरान अक्षय कुमार ने एक ऐसा वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया हों जिसे सुनकर आप भी हैरान रह जाएंगे। दरअसल अक्षय कुमार ने बुधवार को मुंबई में अपनी अपकमिंग फिल्म सेल्फी के प्रमोशन के दौरान एक इवेंट में तीन मिनट में सबसे ज्यादा सेल्फी लेने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इस बात की जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया पर कुछ फोटोज और वीडियो शेयर कर दी है। इसके साथ ही उन्होंने फैंस को आभार भी जताया है। इवेंट में अक्षय ऑरेंज जंप सूट में नजर आए। इस दौरान उन्होंने स्टेज

पर 184 सेल्फी क्लिक की। अक्षय ने इसे शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, मैंने आज तक जो कुछ भी हासिल किया है और लाइफ में जहां भी हूं, वो मेरे फैंस के अनकंडीशनल लव के वजह से है। ये उनके लिए मेरा खास ट्रिब्यूट है, ये स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि वे मेरे साथ कैसे खड़े हैं। मेरे फैंस की मदद से हमने 3 मिनट में सबसे अधिक सेल्फी लेने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया है। आप सभी को धन्यवाद। ये बहुत खास था और मैं इसे हमेशा याद रखूंगा। अब सेल्फी ही सेल्फी होंगी। आप सभी से शुक्रवार को सिनेमाघरों में मिलते हैं। इस पोस्ट के अपलोड करते के साथ ही अक्षय के फैंस इसपर जमकर रियेक्ट करना भी शुरू कर दिए हैं। साथ ही खूब कमेंट करते हुए भी नजर आ रहे हैं।जहां अर्जुन बिजलानी ने भी अक्षय कुमार के इस पोस्ट पर कमेंट करते हुए लिखा है की–गुड वन सर टो यही एक फैन ने कमेंट कर लिखा है की– बहुत खुशी हुई आपका ये जबरदस्त रिकॉर्ड देखकर, तो वही कुछ यूजर तो ये भी कमेंट कर रहे है की– अक्षय कुमार ने वही कपडा पहना है जो उन्होंने कपिल शर्मा के शो में लक्ष्मी के प्रमोशन के वक्त पहना था।बता दे की इस फिल्म में अक्षय कुमार के साथ इमरान हाशमी भी मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं।

›››› बॉलीवुड ‹‹‹‹

आलिया भट्ट की प्राइवेट फोटोज लीक होने का निकला इमरान हाशमी के साथ कनेक्शन

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट के साथ हाल ही में क्या हुआ इससे तो पूरा देश वाकिफ है। कैसे एक्ट्रेस की प्राइवेसी का मजाक उड़ाया गया, कैसे उनके प्राइवेट प्लेस, उनके अपने घर में उन्हें असुरक्षित महसूस करवाया गया ये हाल ही में देखने को मिला। जब एक मशहूर मीडिया पोर्टल के 2 फोटोग्राफर्स ने चोरी–छिपे आलिया भट्ट की उनके लिविंग रूम में बैठे हुए तस्वीरें खींची और उन्हें सोशल मीडिया पर शेयर भी कर दिया। इस पूरे मामले पर आलिया भट्ट के साथ उनके परिवार और बॉलीवुड इंडस्ट्री का गुस्सा भी फुट पड़ा। आलिया ने एक पोस्ट शेयर कर इन लोगों को खूब खरी–खोटी सुनाई। वहीं, ये बात मुंबई पुलिस तक जा पहुंची। खुद पुलिस ने एक्ट्रेस से इस मामले में शिकायत दर्ज करवाने के लिए कहा है। हालांकि, इसी बीच अब एक ऐसी खबर सामने आई है जिसे सुनकर आप भी चौंक जाएंगे। अब इस पूरे केस को बॉलीवुड एक्टर इमरान हाशमी के साथ जोड़कर देखा जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो, आलिया भट्ट की प्राइवेट तस्वीरें लीक होने का इमरान हाशमी के साथ सीधा कनेक्शन है। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है कैसे इमरान हाशमी इसकी वजह बन सकते है अगर आपके मन में भी यही सवाल उठ रहा है तो आपको बता देते है आखिर क्या है पूरा मामला। दरअसल, खुद आलिया भट्ट ने बताया था कि उनकी ये फोटोज पड़ोसियों की बिल्डिंग से क्लिक की गई है। हालांकि, अब कुछ रिपोर्ट्स बताती हैं कि ऐसा इमरान हाशमी के घर से हुआ है। दरअसल, अब ऐसी खबरे हैं कि ये तस्वीरें इमरान हाशमी के घर से लीक हुई हैं। हालांकि इस पूरे केस में उनका कोई कसूर नहीं है। हुआ ये कि उनकी अपकमिंग फिल्म सेल्फी के प्रमोशन के लिए मीडिया के कुछ लोग एक्टर के घर पर पहुंचे थे। और आलिया भट्ट और इमरान हाशमी का घर बांद्रा में आमने–सामने ही है। इमरान हाशमी की छत से आलिया का रूम भी साफ नजर आता है। ऐसे में जब फोटोग्राफर्स को मौका मिला, तो उन्होंने इस बात का फायदा उठा लिया, और आलिया के प्राइवेट स्पेस में उनकी तस्वीर क्लिक कर ली। आपको बता दें, जिस वक्त ये सब हुआ उस दौरान रणबीर भी घर पर मौजूद नहीं थे। वापस लौटने पर उनको जब ये खबर मिली, तो उन्होंने सिक्योरिटी टाइट कर दी।

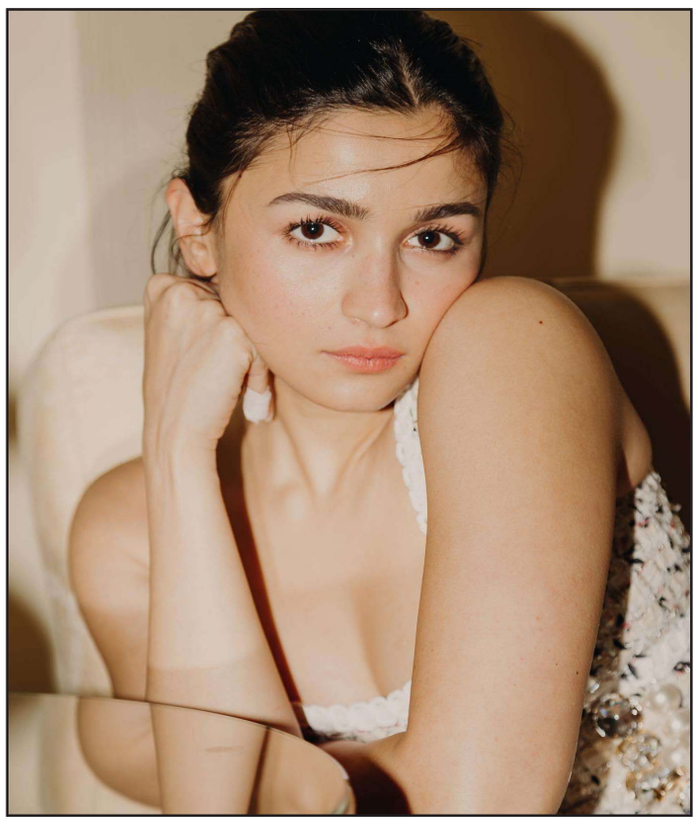

टीवी सीरियल गुम है किसी के प्यार में, क्या सई की घर में वापसी से पाखी को लग गया है डर

टीवी सीरियल गुम है किसी के प्यार में, में इन दिनों दर्शकों का जबरदस्त मनोरंजन करता दिखाई दे रहा है, शो में इस समय जब से सई की एंट्री हुई है मानों जबरदस्त ट्विस्ट देखने को मिल रहा है। सई की चव्हाण हाउस में एंट्री होते ही घर का माहौल बदल गया है। बेशक सई चव्हाण हाउस के आउट हाउस में रह रही हो पर पाखी को अभी भी डर है कही सई वीनू को उससे दूर न कर दे। बता दे शो के आज के एपिसोड में दिखाया जाएगा वीनू को जैसे ही पता चलता है कि सई चव्हाण हाउस के आउट हाउस में रहरही है वैसे ही वो डरने लगता है और पाखी से उसकी हालत देखी नहीं जाती है जिसके बाद काकू सई और सवि के लिए खाना भिजवाती है ये देख कर सोनाली दांग रह जाती है इसके बाद विराट सवि को बताता नजर आएगा कैसे वो पहले इंजॉय किया करते थे और बातों ही बातों में वो सई से माफी भी मांगेगा। शो में जब विराट अपने घर वापस आ जाता है तो पाखी उसपर चिल्लाती है कि उसका सारा ध्यान सवि पर है और उसके बेटे ने सुबह से कुछ नहीं खाया है, उसका कोई ध्यान नहीं है। जिसके बाद पाखी को पता चलता है कि काकू ने सई और सवी के लिए खाना भिजवाया है तो पाखी हैरान होकर कहती कि मतलब सब एक साथ हो गए हैं और केवल मैं ही अकेली हूं जिसके बाद अश्विनी हर मौके पर उसका साथ देने का वादा करती है। इसके बाद पाखी सई को वीनू की रोती हुई वीडियो भेजकर कहती कि वो यहाँ से चली जाए, जिसके बाद सई तंज कस्ते हुए कहती है कि वो अपने बेटे को ठीक किए बिना कही नहीं जाएगी चाहे कुछ हो जाए।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी–18, सेक्टर–सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com